Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

## अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

**अनुवाद:** और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 11

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

16 रजब 1441 हिजरी कमरी 12 अमान 1399 हिजरी शमसी 12 मार्च 2020 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

**जो आदमी अपने बुरे अख़लाक़ की तबदीली चाहता है इस के लिए ज़रूरी है कि सच्चे दिल और पक्के इरादे के साथ तौबा करे।**

**हमारी जमाअत में ज़ोर वालों और पहलवानों की ताक़त रखने वाले अभीष्ट नहीं बल्कि ऐसी क़ुव्वत रखने वाले अभीष्ट हैं जो अख़लाक़ में तब्दीली के लिए कोशिश करने वाले हों।**

## *उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम*

### तौबा के तीन शर्तें

तौबा वास्तव में अख़लाक़ को प्राप्त करे के लिए बड़ा कारण और सहायत चीज़ है और इन्सान को कामिल बना देती है। अर्थात जो आदमी अपने बुरे अख़लाक़ की तबदीली चाहता है इस के लिए ज़रूरी है कि सच्चे दिल और पक्के इरादे के साथ तौबा करे। यह बात भी याद रखनी चाहिए कि तौबा के लिए तीन शर्तें हैं। इन के बिना उनकी पूर्णता के सच्ची तौबा जिसे तौबतुन्नसूह कहते हैं प्राप्त नहीं होती।

इन तीनों शर्तों में से पहली शर्त जिसे अरबी भाषा में "इक़्लाअ" कहते हैं। अर्थात उन बुरे विचारों को दूर कर दिया जाए जो इन बुरे विचारों के कारण हैं। असल बात यह है कि विचारों का बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है क्योंकि कर्म की शक्ल में आने से अधिकतर प्रत्येक एक कर्म एक वैचारिक अवस्था रखता है। अत: तौबा के लिए पहली शर्त यह है कि इन फ़ासिद विचारों बुरी कल्पनाओं को छोड़ दे। जैसे अगर एक आदमी किसी औरत से कोई नाजायज़ सम्बन्ध रखता है तो उसे तौबा करने के लिए पहले ज़रूरी है कि इस की शक्ल को बदसूरत क़रार दे और इस की समस्त बुरे आचरणों को अपने दिल में याद करे। क्योंकि जैसा मैंने अभी कहा है विचारों का प्रभाव बहुत ज़बरदस्त प्रभाव है और मैंने सूफ़ियों के तज़किरों में पढ़ा है कि उन्होंने विचारों को यहां तक पहुंचाया कि इन्सान को बंदर या सूअर के रूप में देखा। अत: यह है कि जैसा कोई विचार करता है वैसा ही रंग चढ़ जाता है। अत: जो ख़्यालात बुरे आनन्द का कारण समझे जाते थे उनका सत्यानाश करे। यह पहली शर्त है।

दूसरी शर्त "नदम" है अर्थात लज्जा और नदामत ज़ाहिर करना। हर एक इन्सान का कानशनस अपने अन्दर क़ुव्वत रखता है कि वह इस को हर बुराई पर सचेत करता है मगर बद-बख़्त इन्सान उस को बेकार छोड़ देता है। अत: गुनाह और बदी के करने पर लज्जा प्रकट करे और यह ख़्याल करे कि ये आन्नद अस्थायी और कुछ दिन के हैं और फिर यह भी सोचे कि हर बार इस लज़्ज़त और आन्नद में कमी होती जाती है। यहां तक कि बुढ़ापे में आकर जबकि शक्तियां बेकार और कमज़ोर हो जाएंगी। आख़िर इन सब आन्नदों दुनिया को छोड़ना होगा। अत: जबकि ख़ुद ज़िन्दगी ही में यह सब बातें छूट जाने वाली हैं तो फिर उनके करने से क्या प्राप्त होगा? बड़ा ही ख़ुश-क़िस्मत है वह इन्सान जो तौबा की तरफ़ रुजू करे और जिसमें अव्वल इक़्ला का कुविचार बेहूदा तसव्वुरों का सत्यानास करे। जब यह गन्दगी और नापाकी निकल जाए तो फिर लज्जित हो और अपने किए पर शर्मिन्दा हो।

तीसरी शर्त अज़्म है। अर्थात आइन्दा के लिए मज़बूत इरादा कर ले कि फिर इन बुराईयों की तरफ़ रुजू न करूँगा और जब वह दृढ़ता करेगा तो अल्लाह तआला उसे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ प्रदान करेगा। यहां तक कि वह बुराइयां इस से स्पष्ट रूप से नष्ट हो कर उच्चतम अख़लाक़ और प्रंशसनीय कर्म उस की जगह ले लेंगे और यह फ़तह है अख़लाक़ पर। इस पर क़ुव्वत और ताक़त बख़्शना अल्लाह तआला का काम है क्योंकि समस्त ताक़तों और कुव्वतों का मालिक वही है। जैसे फ़रमाया :

اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا (अलबक़र :166)

सारी क़ुव्वतें अल्लाह तआला ही के लिए हैं और इन्सान कमज़ोर बुनियाद वाला तो कमज़ोर हस्ती है।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (अन्निसा :29)

उस की हक़ीक़त है। अत: ख़ुदा तआला से क़ुव्वत पाने के लिए ऊपर वर्णित तीनों शर्तों को कामिल कर के इन्सान कमज़ोरी और सुस्ती को छोड़ दे और सदैव तत्पर हो कर ख़ुदा तआला से दुआ मांगे। अल्लाह तआला आचरण में परिवर्तन कर देगा।

### असली बहादुर कौन है?

हमारी जमाअत में ज़ोर वालों और पहलवानों की ताक़त रखने वाले अभीष्ट नहीं बल्कि ऐसी क़ुव्वत रखने वाले अभीष्ट हैं जो अख़लाक़ में तब्दीली के लिए कोशिश करने वाले हों। यह एक सच बात है कि वह ज़ोर वाला और ताक़त वाला नहीं जो पहाड़ को जगह से हटा सके। नहीं नहीं। असल बहादुर वही है जो अख़लाक़ में तब्दील पर सामर्थ्य पाए। अत: याद रखो कि सारी हिम्मत और क़ुव्वत अख़लाक़ में तब्दीली पर व्यतीत करो क्योंकि यही हक़ीक़ी क़ुव्वत और दिलेरी है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 119 से 122 प्रकाशन कादियान)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर जर्मनी, जुलाई 2018 ई (भाग-6)

**हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम से बढ़कर दुनिया में किसी कामिल इन्सान का नमूना मौजूद नहीं और ना अगली क़ियामत तक सकता है।**

**आज इस्लाम की शिक्षा को दुनिया में फैलाने और इस्लामी शिक्षा के बारे में ग़लत विचारों को समाप्त करने का काम अल्लाह तआला ने आँहज़रत के सच्चे ग़ुलाम मसीह मौऊद और मह्दी माहूद की जमाअत के सपुर्द किया है, अतः उस के लिए हर अहमदी को भरपूर कोशिश करने की ज़रूरत है।**

**आज यह हम अहमदियों की ज़िम्मेदारी है कि अपनी इबादतों के स्तर बुलंद करें, ख़ुदा तआला के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलने की कोशिश करते हुए वे सज्दे करें जो सिर्फ हमारे ज़ाती उद्देश्यों के लिए न हूँ बल्कि अल्लाह तआला की हुकूमत को दुनिया में क़ायम करने के लिए हों, रसूल अल्लाह का झंडा दुनिया में लहराने के लिए हों। अपने आपको अल्लाह तआला का वास्तविक अब्द बनाने के लिए हों, इन्सानियत को अपने पैदा करने वाले ख़ुदा के क़रीब लाने के लिए हों, दुनिया को तबाही से बचाने लिए हों**

**रसूल करीम अपने घर अपने घर वालों के साथ घरेलू काम में मदद फ़रमाते थे, आप कपड़े ख़ुद धो लेते थे, घर में झाड़ू भी दे लिया करते थे ख़ुद ऊंट को बाँधते थे ,पानी लाने वाले जानवरों को ख़ुद चारा डालते थे, बकरी ख़ुद दोहते थे, अपने ज़ाती काम भी ख़ुद कर लेते थे। ख़ादिम से कोई काम लेते तो इस में इस का हाथ भी बटाते थे यहां तक कि इसके साथ मिलकर आटा भी गूँध लेते थे, बाज़ार से अपना सामान ख़ुद ढो कर लाते**

**जो उच्च आचरण हज़रत ख़ातमुल अंबिया का क़ुरआन शरीफ़ में ज़िक्र है वह हज़रत मूसा से हज़ारों दर्जा बढ़कर है क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया है कि हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त उन उच्च आचरण का सार हैं जो नबियों में अलग अलग रूप से पाए जाते थे इसी तरह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हक़ में फ़रमाया है وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ۔ तू उच्च आचरण पर है।**

## जलसा सालाना जर्मनी 2019 से सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का समापन ख़िताब।

### जलसा सालाना जर्मनी 2019 ई के अवसर पर नौ मुबाईन की ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं।

**(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)**

**(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)**

**7 जुलाई 2019 ई दिनांक रविवार**

तशह्हुद, ताव्वुज़ और सूर फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सूरत एहज़ाब की आयत 22 की तिलावत फ़रमाई और इस का अनुवाद वर्णन फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

ग़ैर मुस्लिम दुनिया या पश्चिमी दुनिया या तरक़्क़ी कर चुकी दुनिया में जो मुसलमानों के बारे में शंकाए पाई जाती हैं वे उनकी इस्लामी शिक्षा के बारे में कम इल्मी की वजह से ज़्यादा हैं और इस पर कुछ मुसलमानों के इस्लाम के नाम पर कट्टरता और उग्रवाद और क़ानून को अपने हाथ में लेने की बात ने मज़ीद उनके ज़हनों में मज़बूत कर दिया है कि इस्लाम है ही उग्रवाद का मज़हब। आज इस्लाम की शिक्षा को दुनिया में फैलाने और इस्लामी शिक्षा के बारे में ग़लत दारणा को नष्ट करने का काम अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वाआला वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम मसीह मौऊद और मह्दी माहूद की जमाअत के सपुर्द किया है। अतः उस के लिए हर अहमदी को भरपूर कोशिश करने की ज़रूरत है। दुनिया के लोग तो प्रैस और मीडिया की ख़बरों को सुनकर समझते हैं कि जो ये कह रहे हैं अर्थात जो प्रैस कह रहा है वही शत प्रतिशत सच्चा है। मज़हब से दिलचस्पी वैसे ही उमूमी तौर पर दुनिया की प्राय आबादी को नहीं है। अतः इन हालात में बड़ी सख़्त मेहनत और निरन्तर कोशिश से इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा को दुनिया को बताना एक बहुत बड़ा काम है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने इन्सानी ज़िन्दगी का असल मक़सद तो इबादत क़रार दिया है। हमारे आक़ा ने हमें सिर्फ यह नहीं कहा कि अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि तुम्हारी ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह तआला की इबादत है, इसलिए इबादत की तरफ़ हर मोमिन को ध्यान देना चाहिए और वह इस मक़सद को प्राप्त करने की कोशिश करे बल्कि आपने अपनी इबादत के स्तर क़ायम कर के हमारे सामने पेश किए हैं जिनकी क़बूलीयत की सनद भी अल्लाह तआला ने प्रदान फ़रमाई है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है الَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ ۙ وَتَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ अर्थात जो देख रहा होता है जब तू खड़ा होता है और सजदा करने वालों में तेरी व्याकुलता भी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाःअतः जिसके दिल में इन्सानियत के लिए दर्द की यह कैफ़ीयत हो वह क्या कभी ज़ुलम कर सकता है? निसन्देह नहीं! आपने तो ख़ुदा तआला की इबादत और इस की मख़लूक़ की ख़िदमत और इस के लिए दर्द में ज़िन्दगी का हर लम्हा क़ुर्बान किया। आप की इबादत की कैफ़ीयत देखने का कई बार सहाबा को भी अवसर मिल जाता था। एक सहाबी वर्णन करते हैं कि मैंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते देखा। इस वक़्त रोने की प्रचुरता के कारण आपके सीने से ऐसी आवाज़ें निकल रही थीं जैसे चक्की के चलने की आवाज़ होती है। ये दुआएं क्या थीं? ये अल्लाह तआला की पनाह में रहने की दुआएं थीं। ये उम्मत के लिए दुआएं थीं। ये इन्सानियत को तबाही से बचाने के लिए दुआएं थीं। ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएं ही थीं जिन्होंने इस वक़्त भी इन्क़िलाब पैदा किया और सदियों के मुर्दे ज़िन्दा हो कर अल्लाह तआला के वास्तविक इबादत करने वाले बन गए और ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएं ही हैं जिन्होंने क़बूलीयत का दर्जा पाते हुए इस ज़माने में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ को इस बिगड़े हुए ज़माने में इस्लाम की पुनर्जागरण के लिए भेजा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः अतः आज यह हम अहमदियों की ज़िम्मेदारी है कि अपनी इबादतों के स्तर बुलंद करें। ख़ुदा तआला के हुज़ूर इस आदर्श पर चलने की कोशिश करते हुए वे सज्दे करें जो सिर्फ हमारे ज़ाती उद्देश्यों के लिए न हूँ बल्कि अल्लाह तआला की हुकूमत को दुनिया में क़ायम करने के लिए हूँ। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा दुनिया में लहराने के लिए हूँ। अपने आपको अल्लाह तआला का वास्तविक बन्दा बनाने के लिए हूँ। इन्सानियत को अपने पैदा करने वाले ख़ुदा के क़रीब लाने के लिए हूँ। दुनिया को तबाही से बचाने के लिए हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर अल्लाह तआला पर तवक्कुल की हालत है तो इस बारे में भी आपके नमूने उच्च हैं। अल्लाह तआला का यह फ़रमान है कि وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا अर्थात और अल्लाह

शेष पृष्ठ 7 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

**इस्लाम में ख़ुदा के साथ शिर्क करने और माता पिता के अधिकार मारने करने के बाद**
**तीसरे नम्बर पर झूठ बोलने का गुनाह सबसे बड़ा है।**
**ईमान और बुज़दिली एक जगह जमा हो सकते हैं मगर ईमान और झूठ कभी एक जगह जमा नहीं हो सकते**
**जो शख़्स गद्दारी करता है वह क़यामत के दिन ख़ुदा के सख़्त सज़ा के नीचे होगा।**

## इख़लास तथा वफ़ा के पैकर बदरी सहाबी हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि रज़ी अल्लाह अन्हो की मुबारक सीरत का वर्णन।

**सल्तनत मदीना के ख़िलाफ़ ग़द्दारी करने वाले, मुस्लमानों के ख़िलाफ़ वादा तोड़ने वाले, जंग की तहरीक,फ़ित्ना फैलाने वाला ,निर्लज्जता से बातें करने वाले और कत्ल की साज़िश करना इत्यादि की कार्यवाईयों में लिप्त ख़बीस तबीयत यहूदी सरदार कअब बिन अशरफ के क़तल और इस के कारणों का विस्तारपूर्वक वर्णन।**
**कअब के क़तल पर उठाए जाने वाले आरोपों के तर्कपूर्ण उत्तर**
**हदीस मुबारका अलहरबो ख़ुदअतुन की सुक्ष्म व्याख्या।**

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,**
**दिनांक 7 फरवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबी का ज़िक्र होगा उनका नाम है हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि अन्सारी रज़ि। हज़रत मुहम्मद के पिता का नाम मुस्लिमा रज़ि बिन सलमा था। उनके दादा का नाम सलमा के इलावा ख़ालिद भी वर्णन किया गया है और उनकी माता उम्मे सहम थीं जिनका नाम ख़लीदह बिन्त अबू उबैदह था। उनका सम्बन्ध अन्सार के क़बीला औस से था और क़बीला अब्द अश्हल के हलीफ़ थे। हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि की कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह या अबू अब्दुर्-रहमान और अबू सईद भी वर्णन की जाती है। अल्लामा इब्न हज्र के नज़दीक अबू अब्दुल्लाह ज़्यादा उचित है। एक कथन के अनुसार आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत के प्रकट होने से 22 साल पहले पैदा हुए और उन लोगों में से थे जिनका नाम जाहलियत में "मुहम्मद' रखा गया।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 338 मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अलअसाबा भाग 6 पृष्ठ 28 मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत199 ई)

(उसदुल ग़ाबह भाग 5 पृष्ठ 106 मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

मदीना के यहूद इस नबी के मुंतज़िर थे जिसकी बशारत हज़रत मूसि अलैहिस्सलाम ने दी थी। उन्होंने बताया कि इस मबऊस होने वाले नबी का नाम मुहम्मद होगा। जब अरब वालों ने यह बात सुनी तो उन्होंने अपने बच्चों के नाम मुहम्मद रखना शुरू कर दिए। सीरतुन्नबी(सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर आधारित किताबों में जिन लोगों का नाम ज़माना जाहिलीयत में बतौर तफ़ाउल के मुहम्मद रखा गया उनकी संख्या तीन से लेकर पंद्रह तक वर्णन की गई है। अल्लामा सुहेली जो सीरत इब्न हिशाम के व्याख्याकार हैं उन्होंने तीन लोगों के नाम लिखे हैं जिनका नाम मुहम्मद था। अल्लामा इब्न असीर ने छः लोगों के नाम लिखे हैं जबकि अब्दुल वहाब शेअरानी ने उनकी समख्या 14 वर्णन की है। मालूमात के लिए ये पंद्रह नाम या कुछ नाम जो हैं ये बता भी देता हूँ। उनमें हैं मुहम्मद बिन सुफ़ियान, मुहम्मद बिन उहय्हह, मुहम्मद बिन हुमरान, मुहम्मद बिन ख़ुज़ाई, मुहम्मद बिन अदी , मुहम्मद बिन उसामा, मुहम्मद बिन बरा, मुहम्मद बिन हारिस , मुहम्मद बिन हिरमज़, मुहम्मद बिन खोली, मुहम्मद बिन यहमदी, मुहम्मद बिन ज़ैद, मुहम्मद बिन उसैदी और मुहम्मद फ़ुकैमी और हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि (शामिल) हैं

(मुहम्मद रसूलुल्लाह वल्लज़ीना मअहू लेखक अब्दुल हमीद जूदा अस्सहार भाग 2 पृष्ठ 111-112 प्रकाशन मिस्त्र)

(रोज़तुल अनफ़ शरह इब्न हिशाम लेखक अल्लामा सुहेली भाग 1 पृष्ठ 280 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

(उसदुल ग़ाबह ले इब्न असीर भाग 5 पृष्ठ 72 मुहम्मद बिन अहैह, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

( कशफ़ुल ग़मतह अन जमीउल उम्म लिल-शेरानी भाग 1 पृष्ठ 283-284 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1998 ई)

(अलअसाबा भाग 6 पृष्ठ 28 मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि पुराने इस्लाम लाने वालों में से थे। आप हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के हाथ पर हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि से पहले इस्लाम लाए। जब हज़रत अबू उबैदा बिन अलजराह हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको आप के साथ भाई भाई बनाया । आप इन सहाबा में शामिल थे जिन्होंने कअब बिन अशरफ और अबू राफ़े सलाम बिन अबू हुकीक को क़तल किया था। ये दोनों वे फ़ित्ना फैलाने वाले थे जो मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाने के पीछे पड़े थे और इसी कोशिश में होते थे बल्कि मुस्लमानों पर हमला भी करवाने की कोशिश की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी हमला करने की कोशिश की तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको फिर उनके क़तल पर निर्धारित किया था। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कई जंगों के अवसर पर उनको मदीना पर निगरान भी निर्धारित फ़रमाया।

हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि के बेटे जाफ़र, अब्दुल्लाह , सअद, अबदुर्-रहमान और उम्र नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में शामिल होते हैं। हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि जंग बदर, जंग अहद और इस के बाद सिवाए जंग तबूक के समस्त जंगों में शामिल हुए क्योंकि जंग तबूक में वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इजाज़त से मदीने में ठहरने के लिए पीछे रह गए थे

(अलअसाबा फ़ी तमीईज़िस्सहाबा भाग 6पृष्ठ 28-29 मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

(शरह जरक़ानी भाग 2 पृष्ठ 511 हदीस बनी नज़ीर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

जैसा कि ज़िक्र हुआ है कि दो फ़ित्नाप फैलाने वाले और इस्लाम के विरोधियों के क़तल में हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि शामिल थे। इस का कुछ विस्तार तो डेढ़ साल पहले हज़रत उबादा बिन बशिर रज़ि के हवाले से वर्णन कर चुका हूँ। परन्तु कुछ बातें संक्षिप्त में वर्णन करता हूँ। इस के इलावा कुछ और विस्तार भी है। सीरत ख़ातमन्नबय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने कअब बिन अशरफ के क़तल के अन्तर्गत यह लिखा है कि

बदर की जंग ने जिस तरह मदीना के यहूदियों की दिली शत्रुता को प्रकट कर दिया था और वे विरोध में बढ़ गए थे। अपनी शरारतों और फ़ित्ना फैलाने में तरक़्क़ी करते गए। अतः कअब बिन अशरफ के क़त्ल की घटना उसी की एक कड़ी है।

कअब यद्यपि मज़हब से यहूदी था लेकिन दरअसल यहूदी नस्ल न था बल्कि अरब था। इस का बाप अशरफ बनू नबहान का एक होशियार और चलता पुर्ज़ा आदमी था। मदीना में आकर बनू नज़ीर के साथ सम्बन्ध पैदा किए और उनका हलीफ़ बन गया। अन्त में उसने इतना सामर्थय और प्रभाव पैदा कर लिया कि क़बीला बनू नज़ीर के रईस आज़म अबू राफ़े बिन अबी अलहकीक ने अपनी लड़की उसे रिश्ता में दे दी और इस के गर्भ से कअब पैदा हुआ जिसने बड़े हो कर अपने बाप से भी बढ़कर रुत्बा हासिल किया। यहां तक कि अन्त में उसे यह हैसियत हासिल हो गई कि सारे अरब के यहूदी उसे मानो अपना सरदार समझने लगे। अख़लाक़ी दृष्टि से वह एक निहायत गंदे आचरण का आदमी था और ख़ुफ़िया चालों और फित्ना फैलाने के फ़न में उसे बड़ा कमाल हासिल था। नेकी तो उस के पास भी नहीं फटकी थी। अत: कमाल था उस का बुराईयों में, बदियों में, लड़ाने में, फ़साद पैदा करने में, फ़ित्ना पैदा करने में। बहरहाल जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में हिज्रत करके तशरीफ़ लाए तो कअब बिन अशरफ ने दूसरे यहूदियों के साथ मिलकर इस सन्धि में शामिल हुआ की जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और यहूद के मध्य आपसी दोस्ती और अमन तथा शान्ति और साझी प्रतिरक्षा के बारे में लिखा गया था मगर अंदर ही अंदर कअब के दिल में द्वैष की आग सुलगने लग गई और इस ने ख़ुफ़िया चालों और ख़ुफ़ीया कामों से इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक का विरोध शुरू कर दी। कअब का विरोध ज़्यादा ख़तरनाक रूप धारण कर गया। अपने विरोध और फ़ित्ना फैलाने में बढ़ता ही चला गया और अन्त में जंग बदर के बाद तो उसने ऐसा व्यवहार धारण किया जो सख़्त फसाद फैलाने वाला और फ़ित्ना फैलाने वाला था और जिस के नतीजे में मुस्लमानों के लिए निहायत ख़तरनाक हालात पैदा हो गए।

जब बदर के अवसर पर मुस्लमानों को एक ग़ैरमामूली विजय प्रापत हुई और क़ुरैश के अधिकतर रईस मारे गए तो इस ने समझ लिया कि अब यह नया धर्म यूंही मिटता नज़र नहीं आता। पहले तो ख़्याल था यह नया धर्म है ख़त्म हो जाएगा। ख़ुद ही अपनी मौत मर जाएगा लेकिन जब इस्लाम की तरक़्क़ी देखी, बदर के जंग के परिणाम देखे तो फिर उस को विचार पैदा हुआ कि यह इस तरह नहीं मिटेगा। अत: बदर के बाद उसने अपनी पूरी कोशिश इस्लाम के मिटाने और तबाह तथा बर्बाद करने में खर्च कर देने का इरादा कर लिया।

जब कअब को यह यक़ीन हो गया कि वास्तर में बदर की फ़तह ने इस्लाम को वह दृढ़ता प्रदान कर दी है जिसका उसे कल्पना भी न थी तो वह क्रोध तथा से भर गया और फ़ौरन सफ़र की तैयारी करके उसने मक्का की राह ली और वहां जाकर अपनी चर्ब ज़बानी और शेअर कहने के ज़ोर से क़ुरैश के दिलों की सुलगती हुई आग को भड़कने वाला शोला बना दिया, भड़का दिया और उन के दिल में मुस्लमानों के ख़ून की न बुझने वाली प्यास पैदा कर दी और उन के सीने इंतिक़ाम के भावना से भर दिए। और जब कअब की जोश दिलाने से उनके एहसासात में एक इतनहाई दर्जे की बिजली पैदा हो गई तो इस ने उनको ख़ाना काअबा के सेहन में ले जा कर और काअबा के पर्दे उनके हाथों में दे देकर उनसे क़समें लीं कि जब तक इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक को दुनिया से समाप्त न कर देंगे उस वक़्त तक चैन नहीं लेंगे।

इस के बाद इस बद-बख़्त ने दूसरे अरब क़बीलों का रुख किया और एक कबीला से दूसरे कबीला में फिरकर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया। और फिर मदीना में वापस आकर मुस्लमान औरतों पर तश्बीब कही। अर्थात अपने जोश दिलाने वाले अशआर में निहायत गंदे और निर्लज्जता पूर्वक तरीक़ पर मुस्लमान औरतों का ज़िक्र किया। यहां तक कि ख़ानदान नबुव्वत की औरतों को भी अपने इन वहशी अशआर का निशाना बनाने से पीछे न हटा और मुल्क में इन अशआर का चर्चा करवाया। बहरहाल आख़िर फिर उसने यह कोशिश भी की कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़त्ल की साज़िश की और आप को किसी दावत इत्यादि के बहाने से अपने मकान पर बुला कर कुछ नौजवान यहूदियों से आपको क़तल करवाने का मन्सूबा बाँधा मगर ख़ुदा के फ़ज़ल से वक़्त पर सूचना हो गई और इस की यह साज़िश सफल नहीं हुई।

जब नौबत यहां तक पहुंच गई और कअब के ख़िलाफ़ वादा तोड़ने, बग़ावत, जंग की तहरीक, फ़ित्नाप फैलाने, निर्लज्जता पूर्वक बातें कहने और क़तल की साज़िश आरोप के सबूत मिल गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो इस मुआहिदे की दृष्टि से जो आपके मदीने में तशरीफ़ लाने के बाद मदीना के रहने वालों से हुआ था मदीने की जमहूरी सलतनत के सदर और उच्च हाकिम थे तो आप ने यह फ़ैसला फ़रमाया कि कअब बिन अशरफ अपनी कार्यवाईयों की वजह से क़त्ल के योग्य है । चूँकि उस वक़्त कअब के फ़ित्ना फैलाने की वजह से मदीने का माहौल ऐसा हो रहा थी कि अगर उस के ख़िलाफ़ नियम के अनुसार ऐलान करके उसे क़तल किया जाता तो मदीने में एक ख़तरनाक घरेलू जंग शुरू हो जाने की शंका थी जिसमें ना मालूम कितना ख़ून बहता और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर संभव और जायज़ क़ुर्बानी करके बैयनुल अक़वामी ख़ून बहाने को रोकना चाहते थे। आप ने यह हिदायत फ़रमाई कि कअब को सब के सामने, खुले तौर पर क़तल न किया जाए बल्कि कुछ लोग ख़ामोशी के साथ कोई उचित अवसर निकाल कर उसे क़तल कर दें और यह डयूटी आप ने क़बीला औस के एक मुख़लिस सहाबी मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि के सपुर्द फ़रमाई और उन्हें नसीहत फ़रमाई कि जो तरीक़ा भी दारण करें क़बीला औस के रईस साद बिन मआज़ रज़ि के मश्वरे से करें। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह ख़ामोशी के साथ क़तल करने के लिए तो कोई बात कहनी होगी अर्थात कोई उज्र इत्यादि बनाना पड़ेगा जिस की मदद से कअब को इस के घर से निकाल कर किसी महफ़ूज़ जगह में क़त्ल किया जा सके। आप ने इन महान प्रभावों का लिहाज़ रखते हुए जो इस मौक़े पर एक ख़ामोश सज़ा के तरीक़ को छोड़ने से पैदा हो सकते थे फ़रमाया कि 'अच्छा'। अत: मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि ने साद बिन मआज़ रज़ि के मश्वरे से अबू नाइलह रज़ि और दो तीन और सहाबियों को अपने साथ लिया और कअब के मकान पर पहुंचे और कअब को इस के घर के अन्दर से बुलाकर कहा कि हमारे साहिब अर्थात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम से सदक़ा मांगते हैं और हम तंगहाल हैं। क्या तुम मेहरबानी करके हमें कुछ क़र्ज़ दे सकते हो? ये बात सुनकर कअब ख़ुशी से कूद पड़ा और कहने लगा कि अल्लाह की कमस अभी क्या है। वह दिन दूर नहीं जब तुम इस शख़्स से बेज़ार हो कर उसे छोड़ दोगे। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि ने जवाब दिया। ख़ैर हम तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण धारण कर चुके हैं जिस काम के लिए तुम्हारे पास आए हैं तुम यह बताओ कि क़र्ज़ दोगे या नहीं? कअब ने कहा हाँ मगर कोई चीज़ रहन रखो। मुहम्मद रज़ि ने पूछा क्या चीज़? इस बद-बख़्त ने जवाब दिया कि अपनी औरतें रहन रख दो। मुहम्मद रज़ि ने ग़ुस्से को दबा कर कहा कि यह कैसे हो सकता है कि तुम्हारे जैसे आदमी के पास हम अपनी औरतें रहन रख दें। उसने कहा अच्छा तो फिर बेटे सही। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि ने जवाब दिया कि यह भी नामुमकिन है। हम सारे अरब का तान अपने सिर पर नहीं ले सकते। अलबत्ता अगर तुम मेहरबानी करो तो हम अपने हथियार रहन रख देते हैं। कअब राज़ी हो गया और मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि और उन के साथी रात को आने का वादा देकर वापस चले आए और जब रात हुई तो यह पार्टी हथियार इत्यादि साथ लेकर कअब के मकान पर पहुंचे क्योंकि उस वक़्त खुले तौर पर हथियार ला सकते थे जो मुआहिदे के अनुसार देना था और उसे घर से निकाल कर बातें करते करते एक तरफ़ को ले गए और थोड़ी देर बाद चलते चलते मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि या उन के किसी साथी ने किसी बहाने से कअब के सिर पर हाथ डाला और निहायत फुर्ती के साथ उस के बालों को मज़बूती से क़ाबू करके अपने साथियों को आवाज़ दी कि मारो। सहाबा रज़ि ने जो पहले से तैयार थे। हथियारबंद थे, फ़ौरन तलवारें चला दें और अन्त में कअब क़तल हो कर गिरा। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि और उन के साथी वहां से विदा हो कर शीघ्री भा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और आप को इस क़तल की सूचना दी

जब कअब के क़तल की ख़बर मशहूर हुई तो शहर में एक सनसनी फैल गई और यहूदी लोग सख़्त जोश में आ गए और दूसरे दिन सुबह के वक़्त यहूदियों का एक वफ़द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और शिकायत की कि हमारा सरदार कअब बिन अशरफ इस तरह क़तल कर दिया गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी बात सुनकर फ़रमाया क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि कअब किस-किस जुर्म का करने वाला है? और फिर आप ने इशारा में उनको कअब के वादा तोड़ने और जंग की तहरीक और फ़ित्ना फैलाने और निर्लज्जता से बातें कहने और कत्ल की साज़िश इत्यादि की कार्यवाहियां याद दिलाईं जिस पर ये लोग डर कर ख़ामोश हो गए। उन्होंने और अधिक शोर नहीं मचाया। इस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम्हें चाहिए कि कम से कम आइन्दा के लिए ही अमन और सहयोग के साथ रहो और शत्रुता और फ़ित्ना तथा फ़साद का बीज ना बोओ। अत: यहूद की रजामंदी के साथ आगे के लिए एक नया मुआहिदा लिखा गया और यहूद ने मुस्लमानों के साथ अमन- तथा शान्ति के साथ रहने और फ़ित्ना एवं फ़साद के तरीक़ों से बचने

का पुन: वादा किया

अगर कअब मुजरिम न होता तो यहूदी कभी इतनी आसानी से नया मुआहिदा न करते और इस के क़त्ल पर ख़ामोश भी न रहते। बहरहाल ये नया मुआहिदा उन्होंने किया कि आइन्दा हम अमन से रहेंगे। तारीख़ में किसी जगह भी वर्णित नहीं कि इस के बाद यहूदियों ने कभी कअब बिन अशरफ के क़तल का ज़िक्र करके मुस्लमानों पर आरोप लगाया हो क्योंकि उनके दिल महसूस करते थे कि कअब अपनी सज़ा के योग्य है।

कअब बिन अशरफ के क़तल पर कुछ पश्चिमी इतिहासकारों ने बहुत कुछ लिखा है और इस क़त्ल को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामन पर एक बदनुमा धब्बे के तौर पर ज़ाहिर कर के आरोप लगाए हैं। लेकिन देखना यह है कि अव्वल तो यह कि आया यह क़तल अपनी ज़ात में एक उचित कर्म था या नहीं? दूसरे कि जो तरीक़ा उस के क़त्ल के लिए धारण किया गया वह जायज़ था या नहीं

पहली बात के बारे में तो यह याद रखना चाहिए कि कअब बिन अशरफ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बाक़ायदा अमन तथा शान्ति का मुआहिदा कर चुका था और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करना तो दूर की बात रही उसने इस बात का वादा किया था कि वह हर बाहरी दुश्मन के ख़िलाफ़ मुस्लमानों की सहायता करेगा और मुस्लमानों के साथ दोस्ताना सम्बन्ध रखेगा। उसने इस मुआहिदे की दृष्टि से यह भी स्वीकार किया था कि जो रंग मदीने में जमहूरी सलतनत का स्थापित किया गया है इस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सदर होंगे और हर प्रकार के झगड़ों इत्यादि में आप का फ़ैसला सब के लिए स्वीकार योग्य होगा। अत: तारीख़ से साबित है कि इसी मुआहिदे के अधीन यहूदी लोग अपने मुक़द्दमे इत्यादि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश करते थे और आप उनमें आदेश जारी फ़रमाते थे।

अगर इन हालात के होते हुए कअब ने समस्त वादों को दूर करते हुए मुस्लमानों से बल्कि हक़ यह है कि वक़्त की हुकूमत से ग़द्दारी की और मदीने में फ़ित्ना तथा फ़साद का बीज बोया और देश में जंग की आग भड़काने की कोशिश की और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ अरब क़बीलों को ख़तरनाक तौर पर उभारा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल के मंसूबे किए तो उन हालात में कअब का जुर्म बल्कि बहुत से जुर्मों का मजमूआ ऐसा न था कि इस के ख़िलाफ़ कोई सज़ा का क़दम न उठाया जाता ?क्या यह क़तल से कम कोई और सज़ा थी जो यहूद की इस फ़ित्ना फैलाने के सिलसिले को रोक सकती? क्या आजकल सब्य कहलाने वाले देशों में बग़ावत और वाद तोड़ने और जंग का जोश दिलाने और क़तल की साज़िश के जुर्मों में मुजरिमों को क़त्ल की सज़ा नहीं दी जाती।

मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखा है कि अब जो सवाल उठता है वह क़तल के तरीक़ से सम्बन्ध रखता है। सवाल यह उठता है क़तल का तरीक़ क्या था? जायज़ था कि नहीं? अर्थात सवाल यह है कि क़तल का तरीक़ा कैसा था? इस से सम्बन्ध रखने वाला सवाल है।

इस के बारे में याद रखना चाहिए कि अरब में इस वक़्त कोई बाक़ायदा सल्तनत न थी बल्कि हर शख़्स और हर क़बीला आज़ाद और ख़ुद-मुख़्तार था। ऐसी अवस्था में वह कौन सी अदालत थी जहां कअब के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दायर कर के बाक़ायदा क़त्ल का हुक्म हासिल किया जाता? क्या यहूद के पास उस की शिकायत की जाती जिनका वह सरदार था और जो ख़ुद मुस्लमानों के ख़िलाफ़ ग़द्दारी कर चुके थे और आए दिन फ़ित्ने खड़े करते रहते थे? क्या मक्का के क़ुरैश के सामने मुक़द्दमा पेश किया जाता जो मुस्लमानों के ख़ून के प्यासे थे? क्या क़बीला सुलेम तथा ग़तफ़ान से इन्साफ चाहा जाता जो पिछले कुछ महीनों में तीन चार बार मदीना पर छापा मारने की तैयारी कर चुके थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि फिर सोचो कि मुस्लमानों के लिए सिवाए उस के वह कौन सा रास्ता खुला था कि जब एक शख़्स की जोश दिलाने और तहरीक जंग और फ़ित्नाप फैलाने और क़तल की साज़िश की वजह से इस की ज़िन्दगी को अपने लिए और देश के अमन के लिए ख़तरनाक पाते तो ख़ुद सुरक्षा के ख़्याल से मौक़ा पाकर उसे ख़ुद क़तल कर देते क्योंकि यह बहुत बेहतर है कि एक शरारत करने वाले और फसाद फैलाने वाले आदमी क़तल हो जाए बजाय इस के कि बहुत से अमन वाले शहरियों की जान ख़तरे में पड़े और देश का अमन बर्बाद हो।

यह बात भी याद रखनी चाहिए कि इस मुआहिदे की दृष्टि से जो हिजरत के बाद मुस्लमानों और यहूद के मध्य हुआ था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक मामूली शहरी की हैसियत हासिल न थी बल्कि आप इस जमहूरी सलतनत के सदर क़रार पाए थे जो मदीना में स्थापित हुई थी और आप को यह अधिकार दिया गया था कि समस्त झगड़ों और स्यासी मामलों में जो फ़ैसला उचित समझें करें सादर फ़रमाएं। अत: आप ने देश के अमन के लाभ में कअब के फ़ित्ना फैलाने की वजह से उसे क़तल के योग्य क़रार दिया।

अत: इस फैसला क़तल पर कोई एतराज़ की गुंजाइश नहीं है। फिर इतिहास से भी साबित है कि ख़ुद यहूद ने कअब की इस सज़ा को इस के जुर्मों की रोशनी में वाजिब समझ कर ख़ामोशी इख़तियार की और इस पर एतराज़ नहीं किया और अगर यह एतराज़ किया जाए कि ऐसा क्यों नहीं किया गया कि क़तल का हुक्म देने से पहले यहूद को बुला कर उन को कअब के जुर्म सुनाए जाते और हुज्जत पूरी करने के बाद उस के क़तल का बाक़ायदा और स्पष्ट रूप से हुक्म दिया जाता तो इस का जवाब यह है कि इस वक़्त हालात ऐसे नाज़ुक हो रहे थे कि ऐसा तरीक़ धारण करने से बैयनुल अक़वामी पेचीदगीयों के बढ़ने का सख़्त ख़तरा था और कोई आश्चर्य ना था कि मदीना में एक ख़तरनाक ख़ून ख़राबा और घरेलू जंग शुरू हो जाता। अत: इन कामों की तरह जो शीघ्र और ख़ामोशी के साथ ही कर गुज़रने से लाभ होते हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों के अमन को क़ायम रखने के ख़्याल से यही उचित समझा कि ख़ामोशी के साथ कअब की सज़ा का हुक्म जारी कर दिया जाए मगर इस में हरिगज़ किसी किस्म के धोके का दख़ल न था और न आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह इच्छा थी कि यह सज़ा हमेशा के लिए राज़ में रहे क्योंकि जैसे ही यहूद का वफ़द दूसरे दिन सुबह आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ौरन बिनी किसी देरी के उन्हें सारी बात सुना दी और इस काम की पूरी पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेकर यह साबित कर दिया कि इस में कोई धोखे इत्यादि का सवाल नहीं है और यहूदियों को यह बात वाज़िह तौर पर बता दी कि अमुक अमुक ख़तरनाक जुर्मों के आधार पर कअब के बारे में यह सज़ा चुनी गई थी जो मेरे हुक्म से जारी की गई है।

बाक़ी रहा यह एतराज़ कि इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अस्हाब को झूठ और धोखे की इजाज़त दी। अत: यह बिलकुल ग़लत है और सही रवायतें इस का इन्कार करती हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हरिगज़ झूठ और ग़लत बोलने की इजाज़त नहीं दी बल्कि बुख़ारी की रिवायत से पता चलता है जब मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि ने आप से यह पूछा कि कअब को ख़ामोशी के साथ क़तल करने के लिए तो कोई बात कहनी पड़ेगी तो आप ने इन महान लाभों को सामने रखते हुए जो ख़ामोश सज़ा के कारण थे जवाब में सिर्फ इस क़दर फ़रमाया कि 'हाँ और इस से ज़्यादा इस अवसर पर आप की तरफ़ से या मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि की तरफ़ से हरिगज़ कोई व्याख्या नहीं हुई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सिर्फ यह अर्थ था कि मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि और उन के साथी जो कअब के मकान पर जाकर उसे बाहर निकाल कर लाएंगे तो इस अवसर पर उन्हें लाज़िमन कोई ऐसी बात कहनी होगी जिसके नतीजे में कअब रजामंदी और ख़ामोशी के साथ घर से निकल कर उन के साथ आ जाए और इस में हरगिज़ कोई बुराई नहीं है। आख़िर जंग के दौरान में जासूस इत्यादि जो अपने फ़र्ज़ अदा करते हैं उनको भी तो इसी किस्म की बातें कहनी पड़ती हैं जिस पर कभी किसी अक़लमंद को एतराज़ नहीं हुआ। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दामन तो बहरहाल पवित्र है। बाक़ी रहा मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि इत्यादि का मामला जिन्होंने वहां जाकर व्यवाहारिक रूप से इस किस्म की बातें कीं। अत: उन की गुफ़्तगु में भी दरहक़ीक़त कोई बात अख़लाक़ के ख़िलाफ़ नहीं है। उन्होंने वास्तव में कोई ग़लत बात नहीं की अलबत्ता अपने मिशन के उद्देश्य को सम्मुख रखते हुए कुछ दो अर्थों वाले शब्द ज़रूर इस्तिमाल किए। विभिन्न अर्थ निकलने वाले शब्द इस्तिमाल किए मगर उनके बग़ैर को ई रास्ता नहीं था और जंग के हालात में एक अच्छे और नेक उद्देश्य के अधीन सादा और साफ़ कहने के तरीक़ से इस क़दर कम हटना हरगिज़ किसी अक़लमंद दयानतदार व्यक्ति के निकट आरोप योग्य बात नहीं हो सकती।

अब यह सवाल भी कई लोगों ने उठाया कि क्या जंग में झूठ बोलना और धोखा देना जायज़ है? कुछ रिवायतों में यह वर्णित हुआ है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि अल हर्बो ख़ुदअतुन अर्थात जंग तो एक धोखा है और इस से नतीजा यह निकाला जाता है कि नऊज़ बिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से जंग में धोखे की इजाज़त थी। हालाँकि पहले तो अल हर्बो ख़ुदअतुन के यह अर्थ नहीं हैं कि जंग में धोखा करना जायज़

है बल्कि इस के अर्थ सिर्फ यह हैं कि जंग ख़ुद एक धोखा है। अर्थ जंग के नतीजे के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता कि क्या होगा। अर्थात जंग के नतीजे पर इतनी विभिन्न बातें प्रभाव डालती हैं कि चाहे कैसे ही हालात हों नहीं कहा जा सकता कि नतीजा क्या होगा और इन अर्थों की सत्यता इस बात से होती है कि हदीस में यह रिवायत दो तरह से वर्णन की गई है। एक रिवायत में यह शब्द हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल हर्बो ख़ुदअतुन अर्थात जंग एक धोखा है। और दूसरी रिवायत में यह है कि सम्मय अलहरब खुदअतुन अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग का नाम धोखा रखा था। सम्मय अलहरब खुदअतुन। और दोनों के मिलाने से यह नतीजा निकलता है कि आप की इच्छा यह नहीं थी कि जंग में धोखा करना जायज़ है बल्कि यह थी कि जंग ख़ुद एक धोखा देने वाली चीज़ है लेकिन अगर ज़रूर उस के यही अर्थ किए जाएं कि जंग में धोखा जायज़ है तो फिर भी यक़ीनन उस जगह धोखे से जंगी तरीके और उपाय मुराद है। झूठ और फ़रेब हरगिज़ मुराद नहीं है क्योंकि इस जगह ख़ुद के अर्थ दांव पेच और जंग की चालों के हैं ,झूठ और फ़रेब के नहीं हैं। अत: अर्थ यह है कि जंग में अपने दुश्मन को किसी तरीके और तदबीर से ग़ाफ़िल करके क़ाबू में ले आना या मग़लूब कर लेना मना नहीं है

अब दाव पेच की भी विभिन्न अवस्थाएं हो सकती हैं। जैसे सही रवायतों से यह प्रमाणित है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी मुहिम में निकलते तो उमूमन अपना मंज़िल मक़सूद ज़ाहिर नहीं फ़रमाते थे और कई बार ऐसा भी करते थे कि जाना तो दक्षिण की तरफ़ होता था मगर शुरू शुरू में उत्तर की तरफ़ रख कर के रवाना हो जाते थे और फिर चक्कर काट कर दक्षिण की तरफ़ घूम जाते थे या कभी कोई व्यक्ति पूछता था कि किधर से आए हो तो बजाय मदीने का नाम लेने के क़रीब या दूर के पड़ाव का नाम ले देते थे या इसी किस्म की कोई और जायज़ जंगी तदबीर धारण फ़रमाते थे या जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में इशारा किया गया है कि सहाबा कई बार ऐसा करते थे कि दुश्मन को ग़ाफ़िल करने के लिए मैदाने जंग से पीछे हटना शुरू कर देते थे और जब दुश्मन ग़ाफ़िल हो जाता था और इस की सफ़ों में अबतरी पैदा हो जाती थी तो फिर अचानक हमला कर देते थे और यह सारी अवस्थाएं उस ख़ुद की हैं जिसे जंग की हालत में जायज़ क़रार दिया गया है और अब भी जायज़ समझा जाता है लेकिन यह कि झूठ और ग़द्दारी इत्यादि से काम लिया जाए इस से इस्लाम निहायत सख़्ती के साथ मना करता है। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्राय फ़रमाया करते थे कि इस्लाम में ख़ुदा के साथ शिर्क करने और माता पिता के हुक़ूक़ नष्ट करने के बाद तीसरे नम्बर पर झूठ बोलने का गुनाह सबसे बड़ा है। इसी तरह फ़रमाते थे कि ईमान और बुज़-दिली एक जगह जमा हो सकते हैं मगर ईमान और झूठ कभी एक जगह जमा नहीं हो सकते और धोखे और ग़द्दारी के बारे में फ़रमाते थे कि जो शख़्स ग़द्दारी करता है वह क़यामत के दिन ख़ुदा के सख़्त अज़ाब के नीचे होगा। अत: जंग में जिस किस्म के धोखे की इजाज़त दी गई है वह हक़ीक़ी धोखा या झूठ नहीं है बल्कि इस से वह जंगी चालें मुराद हैं जो जंग में दुश्मन को ग़ाफ़िल करने या उसे मग़लूब करने के लिए धारण की जाती हैं और जो कई अवस्थों में ज़ाहिरी तौर पर झूठ और धोके के सदृश्य तो समझी जा सकती हैं मगर वह वास्तव में झूठ नहीं होतीं। अत: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि हमारे विाचरा में निम्निलिखत हदीस इस की तसदीक करती है। और वह हदीस यह है कि

उम्मे कुलसूम बिन्त अक़बा रिवायत करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सिर्फ तीन अवसरों के लिए ऐसी बातों की इजाज़त देते सुना जो वास्तव में तू झूठ नहीं होतीं मगर आम लोग उन्हें ग़लती से झूठ समझ सकते हैं। पहली यह कि जंग। दूसरा यह कि लड़े हुए लोगों के मध्य सुलह कराने का अवसर और तीसरा जबकि मर्द अपनी औरत से या औरत अपने मर्द से कोई ऐसी बात करे जिसमें एक दूसरे को राज़ी और ख़ुश करना मक़सूद हो। नेक नीयत, हर सूरत में नीयत नेक होना चाहिए या नेक मक़ासिद हासिल होने चाहिऐं।

यह हदीस इस बात में किसी शंका की गुंजाइश नहीं छोड़ती कि जिस किस्म के धोखे की जंग में इजाज़त दी गई है झूठ और धोखा मुराद नहीं है बल्कि वे बातें मुराद हैं जो की बार जंगी तदाबीर के तौर पर धारण करनी ज़रूरी होती हैं और जो हर क़ौम और हर मज़हब में जायज़ समझी गई हैं।

कअब बिन अशरफ की घटना का वर्णन करने के बाद इब्न हिशाम ने यह रिवायत नक़ल की है कि कअब के क़तल के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से यह इरशाद फ़रमाया था कि अब जिस यहूदी पर तुम क़ाबू पाओ उसे क़तल कर दो। अत: एक सहाबी मुहय्यसह नामक ने एक यहूदी पर हमला करके उसे क़तल कर दिया था और यही रिवायत अबू दाऊद ने नक़ल की है और दोनों रिवायतों का आधार इब्ने इसहाक़ है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि इलम रिवायत की दृष्टि से यह रिवायत कमज़ोर और भरोसा न करने को योग्य है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बिलकुल नहीं कहा क्योंकि इब्न हिशाम ने तो उसे बग़ैर किसी किस्म की सनद के लिखा है, कोई सनद है ही नहीं और अबू दाऊद ने जो सनद दी है वह कमज़ोर और त्रुटिपूर्ण है। इस सनद में इब्न इसहाक़ यह वर्णन करते हैं कि मैंने यह घटना ज़ैद बिन साबित के एक आज़ाद किए ग़ुलाम से सुनी थी और इस बिना नाम के ग़ुलाम ने, पता ही नहीं यह कौन है इस का नाम known भी नहीं है, महीसा की एक बिना नाम की लड़की से सुना था। वह भी एक लड़की की रिवायत दे रहा है जिसका नाम पता ही नहीं। रिवायतों में कहीं नहीं पता लगता कौन है और इस लड़की ने अपने बाप से सुना था। अब हर शख़्स समझ सकता है कि इस किस्म की रिवायत जिसके दो रावी बिलकुल बिना नाम के हों, जिनके नामों का भी पता ही न हो और मजहूल हूँ हरगिज़ स्वीकार योग्य नहीं हो सकती और दराएत की दृष्टि से भी ग़ौर किया जाए तो यह क़िस्सा दरुस्त साबित नहीं होता क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आम तरीक़ा इस बात को स्पष्ट रूप से झुटलाता है कि आप ने इस किस्म का आम हुक्म दिया हो। इस के अतिरिक्त अगर कोई आम हुक्म होता तो यक़ीनन इस के नतीजे में कई क़तल हुए होते मगर रिवायत में सिर्फ एक क़तल का वर्णन है जो इस बात का सबूत है कि कोई आम हुक्म नहीं था और फिर जब सही रिवायत से यह साबित है कि दूसरे दिन ही यहूद के साथ नया मुआहिदा हो गया था तो इस अवस्था में यह हरगिज़ क़बूल नहीं किया जा सकता कि इस मुआहिदे के होते हुए इस किस्म का हुक्म दिया गया हो और अगर इस किस्म की कोई घटना होती तो यहूदी लोग उस के बारे में ज़रूर शोर करते, शोर मचाते मगर किसी तारीख़ी रिवायत से ज़ाहिर नहीं होता कि यहूद की तरफ़ से कभी कोई इस किस्म की शिकायत की गई हो। अत: रिवायत और दिराएत दोनों तरह से यह क़िस्सा ग़लत साबित होता है और अगर इस में कुछ हक़ीक़त समझी जा सकती है तो सिर्फ इस क़दर कि जब कअब बिन अशरफ के क़तल के बाद मदीने में एक शोर पैदा हुआ और यहूदी लोग जोश में आ गए तो उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूदियों की तरफ़ से ख़तरा महसूस करके सहाबा से यह फ़रमाया होगा, यह संभावना है । कोई क़तई सबूत इस का भी नहीं है कि जिस यहूदी की तरफ़ से तुम्हें ख़तरा हो और तुम पर हमला करे तुम उसे दिफ़ा में क़तल कर सकते हो । मगर मालूम होता है कि यह हालत सिर्फ़ चंद घंटे रही। अगर यह संभावना ली भी जाए तो यह संभावना सिर्फ़ कुछ घंटे थी क्योंकि उस के बाद तो मुआहिदा हो गया था। क्योंकि दूसरे दिन ही यहूद के साथ पुन: मुआहिदा हो कर अमन तथा शान्ति की अवस्था पैदा हो गई थी।

फिर आप लिखते हैं कि कअब बिन अशरफ के क़तल की तारीख़ के बारे में कुछ मतभेद है। इब्ने साद ने उसे रबी उल-अव्वल तीन हिज्री में वर्णन किया है लेकिन इब्न हिशाम ने उसे सरिया ज़ैद बिन हारिसा के बाद रखा है जो निश्चित रूप से तौर पर जमादी अल आख़िर में हुआ है। आप लिखते हैं कि मैंने इस जगह इब्न हिशाम की तर्तीब समक्ष रखी है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 466 से 477)

बहरहाल अभी अन्य कुछ एक दो घटनाएं हैं। वे इंशा अल्लाह भविष्य में पेश होंगी।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 28 फरवरी 2020 ई पृष्ठ 5- 8)

**इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें**

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

पर तवक्कुल कर और अल्लाह ही कमा बनाने वाले के तौर पर काफ़ी है। फिर आप की ज़िन्दगी में हर मौक़े पर नमूने हमें नज़र आते हैं बल्कि मौत की बीमारी के वक़्त आप को इस चीज़ की फ़िक्र थी कि कहीं ऐसा ना हो कि ऐसी हालत में मैं अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हो जाऊं जिसमें ज़रा सा भी अल्लाह तआला पर तवक्कुल न करने की शंका पैदा हो सकती है। अत: हज़रत आयशा वर्णन करती हैं कि मेरे पास आप ने सात या आठ दीनार रखवाए। आख़िरी बीमारी में फ़रमाया कि आयशा वह सोना जो तुम्हारे पास था क्या हुआ? हज़रत आयशा कहती हैं मैंने निवेदन किया कि वह मेरे पास है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आयशा वे सदक़ा कर दो। फिर हज़रत आयशा किसी काम में व्यस्त हो गईं फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब दोबारा होश आई तो पूछा कि वे सदक़ा कर दिया। हज़रत आईशा ने जवाब दिया कि अभी नहीं किया। आप ने उनको भेजा कि जाओ अभी जाओ और मेरे पास ले के आओ। आप ने वे दीनार मंगवा कर अपने हाथ पर रखकर गन्ने और फिर फ़रमाया मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपने रब पर क्या तवक्कुल हुआ अगर ख़ुदा से मुलाक़ात और दुनिया से विदा होते वक़्त यह दीनार उस के पास हूँ। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वे दीनार सदक़ा कर दिए लेकिन आपने दूसरों को ये नसीहत फ़रमाई कि मैं तो अल्लाह तआला का नबी और महबूब हूँ , यह मेरे साथ सुलूक है। अल्लाह तआला पर तुम तवक्कुल भी करो लेकिन अपनी औलाद को फ़िक्र और इबतिला से बचाने के लिए उनके लिए अगर तुम्हारे पास कोई जायदाद है या कोई रक़म है तो छोड़कर जाओ।1/3हिस्सा से ज़्यादा की वसीयत की इजाज़त नहीं दी और अल्लाह तआला ने इसलिए क़ुरआन करीम में तफ़सील से विरासत का तरीक़ा भी बता दिया लेकिन साथ ही आपने यह भी फ़रमाया कि इब्ने आदम के दिल की हर वादी में एक घाटी होती है। हर इन्सान के दिल में एक घाटी है, एक वादी है और जिसका दिल इन सब घाटियों के पीछे लगा रहता है तो अल्लाह तआला उस की परवाह नहीं करता कि कौन सी वादी उस की हलाकत का कारण बनती है और जो अल्लाह तआला पर तवक्कुल करता है तो अल्लाह उसे इन सब घाटियों से बचा लेता है। अत:स इस्लाम दुनिया के कामों की भी इजाज़त देता है लेकिन रात-दिन सिर्फ जायदादें बनाने और दुनिया के कामों में लगे रहने से मना करता है और बुनियादी चीज़ जिसकी तरफ़ तवज्जा दिलाता है वह अल्लाह तआला की इबादत और इस पर तवक्कुल है और जब यह हो तो दुनियावी मुश्किलों से भी इन्सान बच जाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:फिर उच्च आचरण का एक गुण शुक्रगुज़ारी है। इस गुण के उच्च स्तर का हमारे आक़ा का नमूना और आदर्श क्या था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर वक़त इस बात की तलाश रहती थी कि किस तरह ख़ुदा तआला का सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार बंदा बनें। अत: हदीस में आता है, इस मक़सद के लिए आप दुआ किया करते थे कि हे अल्लाह!तू मुझे अपना शुक्र अदा करने वाला और बहुत अधिक ज़िक्र करने वाला बना दे। और एक रिवायत में यह शब्द अधिक हैं कि हे अल्लाह मुझे ऐसा बना दे कि मैं तेरा सबसे ज़्यादा शुक्र करने वाला हूँ और तेरी नसीहत की पैरवी करने वाला हूँ और तेरी वसीयत को याद करने वाला हूँ। क्या ही आजिज़ी का स्थान है। दुनिया का सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार यह दुआ कर रहा है कि मैं सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार बनूं।

एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रोटी के टुकड़े पर खजूर रखकर खा रहे थे और फ़रमाते थे यह खजूर इस रोटी का सालन है और इस पर शुक्रगुज़ारी फ़र्मा रहे थे। प्राय यह होता कि सिरके से या पानी से ही रोटी खाते और इस पर भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा कर रहे होते। आजकल हम में से बहुत से ऐसे हैं जिनको अच्छे खाने भी उपलब्ध होते हैं और फिर भी हज़ार नख़रे होते हैं। घरों में कुछ झगड़े इसी वजह से पैदा हो रहे होते हैं कि बीवी ने अच्छा खाना नहीं पकाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर एक गुण अमानत की अदायगी है और अह्द की पाबंदी है। अल्लाह तआला وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ वे लोग जो अपनी अमानतों और ओहदों का ख़्याल रखते हैं। रिवायत में आता है कि जब इस्लामी फ़ौजों ने ख़ैबर को घेरा तो उस वक़्त वहां के एक यहूदी सरदार का नौकर जो जानवर चराने वाला था जानवरों समेत इस्लामी लश्कर के इलाक़े में आ गया और मुसलमान हो गया। उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल!मैं तो अब मुसलमान हो गया हूँ, मैं बिलकुल वापस जाना नहीं चाहता। वापस जाऊँगा तो मेरे साथ ज़ुलम भी होगा। ये बकरियां मेरे पास हैं उनका अब मैं क्या करूँ। यह यहूदी का रेवड़ है उनका मालिक यहूदी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन बकरियों का मुँह क़िला की तरफ़ फेर कर हाँक दो वे ख़ुद उस के मालिक के पास पहुंच जाएँगी। अत: इसी तरह हुआ और क़िला वालों ने वे बकरियां ले लें। यह है वह उच्च उदाहरण अमानत और दयानत का कि जंग की अवस्था है, दुश्मन का माल हाथ आया है लेकिन मुसलमान होने वाले को पहला सबक़ आपने यह दिया कि एक मुसलमान का अमानत और दियानत का स्तर बहुत बुलंद होना चाहिए। इस माल पर न तुम्हारा कोई हक़ है ना हमारा। उसे उस के मालिकों को लौटा दो। आजकल के इस तरक़्क़ी वाले समाज में जंग की अवस्था में कहीं भी दुनिया में आपको यह मापदण्ड नहीं आएँगे जो इस्लाम पर और इस्लाम की शिक्षा पर एतराज़ करते हैं वही सबसे ज़्यादा इस ख़ियानत करने वाले होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:फिर अह्द की पाबंदी का हाल है कि दुश्मन भी यह कहने पर मजबूर है कि आप अह्द के पाबंद हैं। हिरक़्ल के दरबार में अबूसुफ़ियान को यह इक़रार करना पड़ा कि आज तक इस व्यक्ति ने हमारे साथ अहद नहीं तोड़ा। फिर सुलह हुदैबिया में जब मुआहिदा लिखा जा रहा था तो एक व्यक्ति ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ आता है जो मुसलमान होने की वजह से ज़ंजीरों में जकड़ा गया है और पनाह मांगता है लेकिन इस का बाप जो मुसलमान नहीं है वहां मौजूद है। वह आपसे कहता है कि अब हमारा मुआहिदा हो चुका है कि हमारा कोई आदमी आपके साथ नहीं जाएगा। इसलिए आप उसे साथ नहीं ले जा सकते चाहे वह आपकी पनाह में आने के लिए भीख मांग रहा है। वह व्यक्ति बहुत शोर मचाता है कि क्या मैं काफ़िरों में वापस कर दिया जाऊँगा ता कि वे मुझे तकलीफ़ें पहुंचाएं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम फ़रमाते हैं हाँ अब मुआहिदा हो गया है हालाँकि इस वक़्त मुआहिदा अभी लिखा जा रहा था, शर्तें लिखी गई थीं लेकिन फाईनल नहीं थीं। शर्तों पर दस्तख़त होने से ही आप ने फ़रमाया कि चूँकि लिखा गया है इसलिए बड़े मक़सद के लिए और इस मुआहिदे के लिए तुम्हें क़ुर्बान होना पड़ेगा लेकिन साथ ही उसे यह भी फ़र्मा दिया, उसे ख़ुशख़बरी भी दे दी। तुम वापस जाओ, तुम कुछ रोज़ सब्र करो, मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूँ कि ख़ुदा तआला तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर देगा। आज में इस मुआहिदे की वजह से हूँ। आप ने फ़रमाया कि हम अहद नहीं तोड़ सकते। तो यह स्तर थे आपके मुआहिदों की पाबंदी के। आजकल की दुनियादार हुकूमतें तो उस के क़रीब भी नहीं पहुंच सकतीं। आज एक मुआहिदा होता है और कल वह टूट जाता है लेकिन साथ ही हमें भी अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि हमारे मुआहिदों की पाबंदी के अपने स्तर क्या हैं। अपनी रोज़मर्रा ज़िन्दगी में हमें अपने उदाहरण देखने चाहि। अपनी घरेलू ज़िन्दगी में भी इस का उदाहरण देखें कि क्या ओहदों की पाबंदी हम करते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वाआला वसल्लम ने तो घरेलू ज़िन्दगी में भी अह्द की पाबंदी के बारे में फ़रमाया है कि क़यामत के दिन सबसे बड़ी ख़ियानत यह गिनी जाएगी कि एक आदमी अपनी बीवी से सम्बन्ध क़ायम करे फिर वह बीवी के छुपे राज़ दुनिया में वर्णन करता फिरे। आजकल हम देखते हैं कि कुछ लोग यह घटिया हरकत करते हैं। निहायत ज़लील और कमीनी हरकत करते हैं और फिर लोगों को सिर्फ ज़बानी ही नहीं बताते बल्कि वटस अप पर और दूसरे मीडिया के द्वारा ट्वीटर के द्वारा इस बात को फैलाते चले जाते हैं। यह यक़ीनन सब से बड़े ख़ियानत करने वाले हैं और अल्लाह तआला ने इस से मना फ़रमाया है। और अगर अलग भी हो जाते हैं तो तब भी यह हक़ नहीं है किसी को कि एक दूसरे का राज़ बाहर निकाले। यह बहुत बड़ी ख़ियानत है और अल्लाह तआला की पकड़ में आने वाली बात है। अल्लाह तआला


## अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

**हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए**

**अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।**

**तालिबे दुआ**

**MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY**

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB



## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

**"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"**

**तालिबे दुआ**

**धानू शेरपा**

**सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)**

इस बारे में ज़रूर पूछेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर आजिज़ी एक बहुत बड़ा गुण है। इस के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا۔ और रहमान के सच्चे बंदे वे होते हैं जो ज़मीन पर आराम से चलते हैं और जब जाहिल लोग उनसे सम्बोधित होते हैं तो वे लड़ते नहीं, कहते हैं कि हम तो तुम्हारे लिए सलामती की दुआ करते हैं और एक तरफ़ हो जाते हैं। फ़ुज़ूल बातें नहीं करते। इस बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम का अपना आदर्श क्या था? हज़रत उमर रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना कि मेरी बहुत अधिक प्रशंसा न करो जिस तरह ईसाई इब्न मरियम की करते हैं। मैं सिर्फ अल्लाह का बंदा हूँ। अत: तुम मुझे सिर्फ अल्लाह का बंदा और रसूल ही कहो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम से बढ़कर दुनिया में किसी कामिल इन्सान का नमूना मौजूद नहीं और न अगली क़यामत तक हो सकती है। फिर देखें कि मोजज़ात के मिलने पर भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम के साथ हमेशा उबूदीयत ही रही और बार बार اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ही फ़रमाते रहे। यहां तक कि कलिमा तौहीद में अपनी उबूदीयत के इक़रार का एक भाग लाज़िम क़रार दिया जिसके बिना मुसलमान मुसलमान ही नहीं हो सकता। घरेलू ज़िन्दगी में भी आप की आजिज़ी और घर वालों की मदद का यह हाल था कि हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर अपने घर वालों के साथ घरेलू काम में मदद फ़रमाते थे। आप कपड़े ख़ुद धो लेते थे। घर में झाड़ू भी दे लिया करते थे। ख़ुद ऊंट को बाँधते थे। पानी लाने वाले जानवरों को ख़ुद चारा डालते थे। बिकरी ख़ुद दोहते थे। अपने ज़ाती काम भी ख़ुद कर लेते थे। ख़ादिम से कोई काम लेते तो इस में इस का हाथ भी बटाते थे यहां तक कि इस के साथ मिलकर आटा भी गूँध लेते थे। बाज़ार से अपना सामान ख़ुद उठा लाते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:फिर आप ने फ़रमाया अत: तुम सीधे रहो तुम सीधे रहो और शरीयत के क़रीब रहो और सुबह और शाम और रात के समयों में इबादत करो और मध्य मार्ग धारण करो। तुम अपनी मुराद को पहुंच जाओगे। इबादत करो और बीच का रास्ता धारण करो। मध्य मार्ग हर ममला में ज़रूरी है। दुनियादारी में न पड़ जाओ। दुनिया के कामो जायज़ अधिकार दिया है अल्लाह तआला ने लेकिन मध्यवर्ती होना चाहिए। ख़ुदा न भूल जाए। जहां अल्लाह तआला की इबादत के हक़ अदा करने हैं वहां उस की तरफ़ तवज्जा करो। जो कारोबार है इस की तरफ़ तवज्जा करो और इस के जो हक़ हैं वे अदा करने की कोशिश करो लेकिन दुनियादारी ख़ुदा तआला के हक़ के मुक़ाबले पर नहीं होना चाहिए। धर्म दुनिया पर हमेशा मुक़द्दम होना चाहिए। अब यह जब होगा तो आपने फ़रमाया तुम अपनी मुराद को पहुंच जाओगे। अल्लाह तआला का रहम तुम्हें मिल जाएगा। फ़ज़ल मिल जाएगा। अत: जहां इस बात से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आजिज़ी का इज़हार होता है वहां अल्लाह तआला के भय और ख़ौफ़ का भी इज़हार हो रहा है और फ़रमाया कि जब मेरा यह हाल है तो तुम लोगों को किस क़दर ख़ुदा तआला को राज़ी करने और इस का रहम मांगने की फ़िक्र करनी चाहिए। यह अल्लाह तआला का रहम और फ़ज़ल ही है जो अल्लाह तआला के इनामों का वारिस बनाता है और हमें यह नहीं पता कि किस माध्यम से क़बूल किए जाऐंगे इसलिए इस रहम और फ़ज़ल को प्राप्त करने के लिए अपनी इबादतों और उच्च आचरण की तरफ़ हमें तवज्जा देनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि हाँ जो उच्च आचरण हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़ुरआन शरीफ़ में ज़िक्र है वह हज़रत मूसा से हज़ारों दर्जा बढ़कर है क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया है कि हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त उन उच्च आचरणों का सार है जो नबियों में भिन्न भिन्न तौर पर पाए जाते थे और इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हक़ में फ़रमाया है وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ۔

तू महान आचरण पर है और अज़ीम के शब्द के साथ जिस चीज़ की प्रशंसा की जाए वह अरब के मुहावरे में इस चीज़ के चरम कमाल की तरफ़ इशारा होता है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं: अगर यह महानतम नबी दुनिया में न आता तो फिर जिस क़दर छोटे छोटे नबी दुनिया में आए जैसा कि यूनुस और अय्यूब और मसीह इब्न मरियम और मलाक़ी और यहया और ज़करिया इत्यादि इत्यादि उनकी सच्चाई पर हमारे पास कोई भी दलील नहीं थी यद्यपि सब मुक़र्रब और सम्मान्नीय और ख़ुदा तआला के प्यारे थे। यह इस नबी का एहसान है कि ये लोग भी दुनिया में सच्चे समझे गए।

اللّٰھم صل وسلم وبارك علیہ وآلہ واصحابہ اجمعین وآخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین۔

आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि इस कामिल नबी की उम्मत में आने का हक़ अदा करने वाले हों और इस ख़ूबसूरत और रोशन चेहरे को दुनिया के सामने पेश कर के दुनिया के अंधेरों को दूर करने वाले बनें। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

जलसा सालाना जर्मनी के समापन ख़िताब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद जलसा सालाना की हाज़िरी का ऐलान करते हुए फ़रमाया: इस साल जलसा सालाना की सामूहिक हाज़िरी 42729 है जिसमें से औरतों की हाज़िरी 20924 और मर्दों की हाज़िरी 20706 है। इसके इलावा जो तब्लीग़ी मेहमान शामिल हुए हैं उन की संख्या1099 है

इस साल जलसा सालाना में102 देशों की प्रतिनिधित्व हुआ है और 4025 मेहमान विभिन्न देशों से जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुए हैं। हुज़ूर अनवर ने इस अवसर पर जलसा सालाना कैनेडा का भी ज़िक्र फ़रमाया और हाज़िरी का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि जलसा सालाना कैनेडा की हाज़िरी 18572है और 27 देशों का प्रतिनिधित्व है।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार विभिन्न ग्रुपस ने दुआइया नज़्में और तराने पेश किए। सबसे पहले जर्मन भाषा में एक ग्रुप ने दुआइया नज़्म पेश की। इस के बाद अफ़्रीकन लोगों पर आधारित ग्रुप ने अपने मख़सूस रिवायती अंदाज़ में अपना प्रोग्राम पेश किया। इस के बाद अरब लोगों पर आधारित ग्रुप ने क़सीदा पेश किया। इस के बाद जामिआ अहमदिया जर्मनी के छात्रों ने उर्दू ज़बान में दुआइया नज़्म पेश की। इसके बाद स्पेनिश ज़बान में तरन्नुम के साथ एक दुआइया नज़्म पेश की गई। इस के बाद Macedonia से आए हुए अहमदी लोगों ने मेसीडोनियन ज़बान में ख़ुश-अल्हानी के साथ अपना तराना पेश किया। इस के बाद अल्बानियन ज़बान में दुआइया नज़्म पेश की गई। आख़िर पर ख़ुद्दाम ने उर्दू ज़बान में दुआइया नज़्म पेश की। जब ये तराने और नज़्में पेश की जा रही थीं उस वक़्त बड़ा ईमान वर्धक माहौल था। जैसे ये प्रोग्राम अपने समापन को पहुंचा जमाअत के लोगों ने बड़े वलवले और जोश के साथ नारे बुलंद किए और सारा माहौल नारों की आवाज़ से गूंज उठा। हर छोटा बड़ा , जवान, बूढ़ा अपने प्यारे आक़ा से अपनी मुहब्बत, अक़ीदत और कुर्बानी का इज़हार बड़े जोश से कर रहा था। ये जलसे के समापन के अलविदाई क्षण थे और दिल इशक़ तथा मुहब्बत और फ़िदाईत के भावनाओं से भरे थे।

इस माहौल में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके अपने उश्शाक को अस्सलामो अलैकुम और ख़ुदा हाफ़िज़ कहा और नारों के बीच में जलसा गाह से बाहर पधारे और कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

**नौ मुबाइयात की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात**

प्रोग्राम के अनुसार 7 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर पधारे और विभिन्न देशों से सम्बन्ध


## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

**"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"**

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

**तालिबे दुआ**

**KHALEEL AHMAD**

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

रखने वाली नौ मुबाइयात ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। इन नौ मुबाइयात की संख्या 21 थी और 6 बच्चे भी उनके साथ शामिल थे। इन औरतें का सम्बन्ध जर्मनी, पाकिस्तान, फ़िलस्तीन, ऑस्ट्रिया, अफ़ग़ानिस्तान, एस्टोनिया और सीरिया से था। उनमें से 7 औरतें ऐसी थीं जिन्होंने आज ही बैअत की तौफ़ीक़ पाई थी।

एक औरत ने जलसा सालाना की मुबारकबाद पेश की इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप सबको भी जलसा मुबारक हो।

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या ये सब नौ मुबाइयात हैं या ज़्यादा अर्से से अहमदियत क़बूल की हुई है। इस पर ऐडीशनल सैक्रेटरी तर्बीयत बराए नौ मुबाइयात ने निवेदन किया कि अधिकतर इसी साल की हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर एक औरत ने निवेदन किया कि वह फ़िलस्तीन से हैं और उन्हें अंग्रेज़ी भाषा ज़्यादा नहीं आती। लेकिन उनकी बहन जो एस्टोनिया से आई हैं उन के साथ अनुवाद के लिए आई हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर एक लजना मैंबर ने निवेदन किया कि उनकी उम्र 18 साल है और उसने आज ही बैअत की है। उनकी माता और नानी ने कुछ अरसा पहले बैअत की थी। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला आपके साथ हो।

हुज़ूर अनवर ने एक नौ मुबाइयात औरत से पूछा कि क्या वह जर्मनी में रहती हैं। इस पर महोदया ने निवेदन किया कि वह एक साल आठ माह पहले जर्मनी आई थीं और इस वक़्त फ़्रंकफ़र्ट में रहती हैं। महोदया ने अपने ग़ैर अज़ जमाअत पति के लिए दुआ की दरख़ास्त करते हुए बताया कि वह उनकी रजामंदी के बिना जलसा में शामिल हुई हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दुआ करें, बर्दाश्त करें अल्लाह फ़ज़ल करेगा।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सैक्रेटरी नौ मुबाइयात ने एक मुबाइयात के बारे में बताया कि उनकी उम्र 19 साल है और उन्होंने अपने माता पिता की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बैअत की है और यह अपने माता पिता के साथ नहीं रहतीं और इस वक़्त practical training प्राप्त कर रही है

एस्टोनिया से सम्बन्ध रखने वाली एक औरत ने निवेदन किया कि हुज़ूर मेरे छोटे बच्चे को प्यार दें। इस पर हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए इस ख़ुशनसीब बच्चे को गोद में लिया और चॉकलेट भी प्रदान फ़रमाई। इसी तरह दया करते हुए बाक़ी बच्चों को भी चॉकलेट प्रदान फ़रमाईं।

एक मुबाइयात औरत ने अपने बच्चे के लिए जो वहां मौजूद नहीं था चॉकलेट की दरख़ास्त की। इस पर हुज़ूर अनवर ने उनको भी चॉकलेट प्रदान फ़रमाई।

एक मुबाइयात बहन जो इकनॉमिक्स की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं उन्होंने और अधिक उच्च शिक्षा के हुसूल के लिए रहनुमाई की दरख़ास्त की। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप के लिए जो आसान हो इस फ़ील्ड में जाए।

एक ग़ैर अहमदी औरत का सवाल हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश हुआ कि वह सीरिया देश से सम्बन्ध रखने वाली एक अहमदी से अपनी बेटी की शादी करना चाहती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दुआ कर के करें। जब रिश्ता की बातचीत होगी तो तभी में जवाब दूँगा। बाक़ायदा रिश्ता का परामर्श आएगा तो इजाज़त दूँगा। अभी तो प्रपोज़ल ही नहीं हुआ है।

पाकिस्तान से सम्बन्ध रखने वाली एक औरत ने निवेदन किया कि कुछ अरसा पहले बैअत की है। पाँच बच्चे हैं। पति पहले से अहमदी हैं। महोदया ने अपने पति की सेहत के लिए दुआ की दरख़ास्त की।

रावलपिण्डी पाकिस्तान से सम्बन्ध रखने वाली एक औरत ने निवेदन किया कि पंद्रह साल पहले पाकिस्तान में उनकी बैअत नहीं हो सकी थी। तो उस वक़्त उन्हें यह मश्वरा दिया गया था कि वह अपनी शिक्षा को जारी रखें। अत: उन्होंने मेहनत की और टैक्नोलोजी के मैदान में गोल्ड मैडल की हक़दार ठहरें। तालीमी मैदान में नुमायां कामयाबी पर उन्होंने एक रोज़ पहले हुज़ूर अनवर से ऐवार्ड प्राप्त किया है। महोदया ने अपने माता पिता के क़बूल अहमदियत के लिए दुआ की दरख़ास्त की।

एक औरत ने सवाल किया कि कोई ऐसा कर्म बताएं जो नफ़्स को मार दे तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पाँच नमाज़ें पढ़ो। अल्लाह और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो बातें बताई हैं उन पर अनुकरण करो।

एक औरत ने निवेदन किया कि वह जर्मनी से हैं और अफ़ग़ान नस्ल हैं। वह हुज़ूर अनवर के ख़ुत्बे नियमित सुनती हैं। महोदया ने अपने एक ख़्वाब का ज़िक्र करते हुए कहा कि उन्होंने देखा कि वह जलसा में शामिल के लिए अपनी फ़ैमिली के साथ सफ़र में हैं लेकिन वह अकेली जलसा में पहुँचती हैं। फ़ैमिली का रास्ता में दुर्घटना हो जाती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सदक़ा दें और दुआ करें।

अरब देश से सम्बन्ध रखने वाली एक औरत ने अपने ख़्वाब का ज़िक्र करते हुए कहा कि उन्होंने अपना सिर हुज़ूर अनवर की गोद में रख दिया है और पांव को पकड़ लिया है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उनको धर्म की तरफ़ ध्यान देना चाहिए। शादी के हवाले से हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदया ने निवेदन किया कि उनकी तलाक़ हो गई है और एक बेटा भी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस का अर्थ है कि अल्लाह उस के लिए बेहतर करेगा। अल्लाह उन के लिए बेहतर प्रबन्ध करे। धर्म की तरफ़, तहज्जुद और नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा दें। अल्लाह आप के लिए आसानियां पैदा फ़रमाए।

मलिक ऑस्ट्रिया से आने वाली एक औरत ने निवेदन किया कि वह जमाअत की ख़िदमत किस तरह कर सकती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ऑस्ट्रिया की सदर लजना और मुबल्लिग़ इंचार्ज से बात करें।

जर्मनी से सम्बन्ध रखने वाली एक औरत ने निवेदन किया कि हुज़ूर बहुत fresh हैं इस ताक़त का राज़ किया है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "अल्लाह की मदद"

एक औरत ने निवेदन किया कि जलसा सालाना के अवसर पर किसी मुक़र्रर ने बरकाते ख़िलाफ़त का ज़िक्र करते हुए बताया कि किसी औरत ने हुज़ूर अनवर का चेहरा मुबारक देखकर औलाद की दुआ की तो अल्लाह तआला ने उन्हें औलाद की नेअमत से नवाज़ा। और आज जलसा की कार्रवाई के दौरान उन्होंने हुज़ूर अनवर का चेहरा मुबारक देखकर प्यारे आक़ा से मुलाक़ात की दुआ की थी और अल्लाह तआला ने उनकी इच्छा पूरी कर दी।

मुलाक़ात के आख़िर पर इन नौ मुबाइयात ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। उनकी दरख़ास्त पर हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए उनको क़लम भी प्रदान फ़रमाए। मुलाक़ात का यह प्रोग्राम 7 बजकर 45 मिनट पर ख़त्म हुआ

**नौ मुबाईन की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात**

इस के बाद नौ मुबाइअ मर्दों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन नौ मुबाईन की संख्या22 के क़रीब थी। जिन में अरब, जर्मनी और तुर्की से सम्बन्ध रखने वाले नौ मुबाइयीन शामिल थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी सब नौ मुबाईन से परिचय प्राप्त किया। उनमें कुछ ने कहा कि उन्होंने आज बैअत की है। प्राय नौ मुबाईन ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में सलाम निवेदन कर के अपने लिए और अपनी फ़ैमिली के लिए दुआ की दरख़ास्त की।

एक नौ मुबाइअ ने निवेदन किया कि पिछले साल हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में बाक़ी लोगों ख़ैरियत के नार्वे पहुंचने के लिए दुआ की दरख़ास्त की थी। अल्लाह के फ़ज़ल से अब सब लोग ख़ैरियत से नार्वे पहुंच गए हैं। महोदय के पिता साहिब ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में नार्वे आने का निवेदन किया।

एक दोस्त मुहम्मद साक़िब साहिब ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि ख़्वाब में देखा कि हुज़ूर अनवर बच्चों की एक कक्षा में पधारे हैं। मैं भी वहीं हूँ। हुज़ूर ने मेरी तरफ़ देखकर अपनी तरफ़ बुलाया है और हाथ मिलने से नवाज़ा और प्यार किया। हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह इस प्यार को क़ायम रखे।

सीरिया के एक दोस्त मुहम्मद अलसबाग़ साहिब ने जनवरी 2019 ई में बैअत की। उन्होंने अपनी क़बूलीयत अहमदियत के बारे में से बताया कि उनके पिता साहिब ने 2008 ई में सीरिया में बैअत की थी। फिर एक भाई ने भी कर ली। लेकिन मैं तीन बार जलसा पर आया हूँ और लोगों को भावनाओं से रोते देखकर हैरान होता था और हँसता था कि ये लोग क्यों रोते हैं। लेकिन मैं मुख़ालिफ़ ही रहा और बैअत नहीं की।

फिर ख़ुदा तआला से दुआ की कि अगर यह जमाअत सच्ची है तो अल्लाह तआला ख़ुद ही रहनुमाई फ़र्मा दे। इस पर मैं ने ख़्वाब में देखा कि इसी मुलाक़ात का सा अवसर है। लोग बैठे हैं। मैं पहली सफ़ में बैठा हूँ। सब दोस्त ख़ामोश हैं। हुज़ूर पधारे और मैंने अपने आप रोना शुरू कर दिया। हुज़ूर ने अपने पास बुलाकर प्यार से फ़रमाया कि इधर पास बैठ जाओ। इस पर बेदार हुआ तो बैअत के लिए दिल खुल चुका था। और बैअत कर ली।

महोदय ने अपनी माता की बैअत के लिए भी दरख़ास्त की इस नौजवान ने हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने की इजाज़त चाही। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मुलाक़ात के बाद सबको अवसर मिलेगा। मुलाक़ात के बाद इन साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से हाथ मिलाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया और तस्वीर बनवाने की सौभाग्य भी पाया।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि बैअत के बाद मेरे सारे काम दरुस्त हो गए हैं। केस भी पास हो गया है। रिहायश का प्रबन्ध भी हो गया। और job भी मिल गई है

एक जर्मन नौ मुबाइअ ने निवेदन किया कि मैंने बैअत कर ली है मैं किस तरह रूहानियत में बढ़ सकता हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पाँच वक़्त की नमाज़ों की पाबंदी करें। सूरह फ़ातिहा याद करें। फिर उसका अनुवाद याद करके इस पर ग़ौर करते रहें

एक मुबाइयात ने निवेदन किया कि मैंने आज बैअत की है। बीवी ने पिछले साल बैअत की थी अब हम दोनों अहमदी हैं। महोदय ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ का निवेदन किया।

एक नौ मुबाइअ ने निवेदन किया कि मेरा सम्बन्ध तुर्की से है। अब जर्मनी में रहता हूँ। मुझे पहले शरह सदर न था। अब शरह सदर हुआ है और मैंने बैअत कर ली है। अब मैं वफात तक उस को निभाऊंगा। महोदय ने निवेदन किया कि मुझे बहुत पहले बैअत कर लेनी चाहिए थी।

एक मुबाइयात ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर के साथ मजलिस में बैठना हमारे लिए बहुत एज़ाज़ की बात है। हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पिताा के लिए भी दुआ की दरख़ास्त है। पिताा ने कहा था कि जब हुज़ूर से मिलो तो मेरा सलाम निवेदन करना

नौ मुबाईन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 8 बजकर 15 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर समस्त नौ मुबाईन ने हुज़ूर अनवर के साथ व्यक्तिगत तौर पर तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार यहां Karlsruhe से फ्रकफ़र्ट के लिए रवाना होने हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और क़ाफ़िला 8 बजकर 40 मिनट पर बैयतुस्सुबूह फ्रकफ़र्ट के लिए रवाना हुआ।

जब हुज़ूर अनवर की गाड़ी जलसा गाह के अहाते से बाहर निकल रही थी तो रास्ता के दोनों तरफ खड़े हज़ारों लोग मर्द तथा औरतें और बच्चों, बच्चियों ने अपने हाथ हिलाते हुए अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहा। जमाअत के लोग निरन्तर नारे बुलन्द कर रहे थे। बच्चियां ग्रुपस की सूरत में अलविदाई नज़्में पढ़ रही थीं। लगभग 1 घंटा 35 मिनट के सफ़र के बाद सवा दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की बैयतुस्बूह पधारे।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने 10:30 बजे तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

नौ मुबाईन के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 37 मर्दों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मुबारक हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इन बैअत करने वालों का सम्बन्ध 16 विभिन्न क़ौमों से था। बैअत का सौभाग्य पाने वाले लोगों ने अपनी इस ख़ुशनसीबी पर बहुत ख़ुशी का इज़्हार किया। कुछ लोगों ने बैअत के बाद अपनी भावनाओं को वर्णन किया और भावनाओं का इज़हार किया जो नीचे दर्ज हैं।

कोसोवो के वफ़द में शामिल एक दोस्त Mr. Skender Asllani साहिब जो कि अल्बानियन भाषा और लिट्रेचर के उस्ताद हैं और उन्हें इस साल बैअत करने का सौभाग्य नसीब हुआ है, उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: प्रबन्ध बहुत उच्च स्तर के थे। ढूढने पर भी कोई नुक़्स नहीं मिला। तक़रीर का स्तर बहुत उम्दा था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़त्बों का बहुत असर वाले थे। वह कहते हैं कि सफ़र की थकावट इस क़दर थी कि वर्णन से बाहर है। लेकिन हुज़ूर अनवर को देखने और पहली बार आपके पीछे नमाज़ पढ़ने के बाद थकावट का नामो निशान न रहा और ऐसा महसूस हो रहा था कि मानो अभी एक लम्बी नींद के बाद जागा हूँ। बैअत करना एक इनाम है जिसकी क़दर हम सबको करनी चाहिए क्योंकि इस माहौल में एक हाथ पर जमा होना ही कामयाबी की कुंजी है।

वफ़द में शामिल एक दोस्त Mr Labinot Rexhad साहिब वहां एक "हाईस्कूल" के प्रिंसिपल हैं और पहली बार जलसा सालाना में शामिल हुए हैं। उनको बैअत करने का भी सौभाग्य मिला। उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: जलसा सालाना ने मुझ पर एक ख़ास भावनात्मक प्रभाव डाला है। जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला हाल में तशरीफ़ लाते तो नारों का बुलंद हो जाना और इसी तरह हुज़ूर का फ़रमाना कि 'बैठ जाएं। तो इतने बड़ी भीड़ का फ़ौरन बैठ जाना , यह दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलता। हुज़ूर अनवर के ख़त्बे हर किस्म के ज्ञान से सुसज्जित थे और इन्सान के ध्यान को खींचते थे। मेरा यह कहना है कि यह जलसा 3 दिन का नहीं बल्कि 30 दिनों का होना चाहिए। प्रबन्ध में कोई कमी देखने को नहीं मिली। अगले साल के जलसा में शामिल होने के लिए बेक़रार हूँ। मेरा इरादा बैअत करने का नहीं था लेकिन बैअत के दौरान तबीयत में ऐसा प्रभाव पैदा हुआ कि अपने आप ही हाथ उठ गया और शब्द दोहराने शुरू कर दिए।

कोसोवो के वफ़द में एक और दोस्त Mr Afrim Hoxha साहिब पहली बार अपनी फ़ैमिली के साथ जलसा में शामिल हुए हैं और 5 लोगों की सारी फ़ैमिली को बैअत करने की भी सौभाग्य प्राप्त हुई है। उनका कहना है:पहले मुझे बैअत का एक डर था कि किस तरह होगी और जिस्म घबराहट से काँप रहा था लेकिन प्यारे हुज़ूर को देखने और बैअत करने के बाद तबीयत में सुकून सा महसूस होने लगा और जिस्म काँपना बंद हो गया।

कोसोवो के वफ़द में एक दोस्त Mr Minator Nalokw साहिब पहली बार जलसा में शामिल हुए और उन्हें बैअत करने का भी सौभाग्य मिली। वह कहते हैं: अपनी इच्छाओं और भावनाओं को शब्द में वर्णन करने से असमर्थ हूँ। ख़लीफ़तुल मसीह से मिलने के बाद ऐसा महसूस होता है कि जैसे ज़िन्दगी मुकम्मल और कामयाब हो गई है। मेरी ज़िन्दगी में कब से एक इच्छा थी कि कोई ऐसा वजूद मुझे मिले जो दुनिया की फ़िक्र करने वाला हो और जिस से मिलकर मेरे समस्त समस्याएँ और तकलीफ़ें दूर हो जाएं। मेरा इस जलसा में शामिल होना ख़ुदाई तसर्रुफ़ से था और बैअत करते वक़्त मुझे ऐसा लग रहा था कि मानो में ख़ुदा के क़रीब हो गया हूँ।

किर्गीज़स्तान से आने वाले एक दोस्त सलाहुद्दीन साहिब वर्णन करते हैं: मुझे जलसा बहुत अच्छा लगा मगर सवाल का अवसर नहीं मिला। जलसा से पहले ख़ाकसार के जिस्म में बहुत दर्द थी मगर बैअत के बाद दर्द का कुछ न रहा।

किर्गीज़स्तान से आने वाले एक दोस्त Dr Jagyn bek Baer साहिब वर्णन करते हैं :मैं जो चाहता था वह मुझे ख़लीफ़तुल मसीह के साथ मुलाक़ात में प्राप्त हो गया। बैअत के दौरान मुझे बहुत रोना आया। आज भी मुश्किल से अपने आपको रोका था। मैं अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे ख़लीफ़तुल मसीह से हाथ मिलाने का अवसर दिया और मुझे ऐसा लगा कि जैसे मेरे पर निकल आए हैं और मैं उड़ रहा हूँ। जलसा के दिन मेरी ज़िन्दगी के बहुत ग़ैरमामूली दिन हैं।

सेवदजन सलीमा नौसकी साहिब (Sevdjan Sulejmanovski) अपनी भावनाओं को इस तरह प्रकट करते हैं कि आज मैंने अहमदियत क़बूल की है और इस सम्मान पर बहुत ख़ुश हूँ। इस साल जलसा पर मैंने ज़्यादा संख्या में लोगों को देखा। खाना और रिहायश अच्छी थी। ख़लीफ़तुल मसीह की तक़रीरें बहुत अच्छी थीं क्योंकि इस्लाम के बारे में वह बहुत अच्छे अंदाज़ में बताते हैं। विशेषत: जब वह इस्लाम के बारे में संक्षिप्त शब्दों में वर्णन फ़रमाते हैं। वह आसान और सादा शब्द में बताते हैं। मेरे लिए 2019 ई का जलसा बहुत कामयाब रहा।

आज़रबाईजान से आग़ासफ़ असग़रवो साहिब जलसा में शरीक हुए थे। उन्हें जलसा के दौरान हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। यह अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं कि मैंने कभी सोचा भी न था कि मैं रूहानियत की इतनी बुलंदीयों को देखूँगा जो ख़लीफ़तुल मसीह की ज़ात में हैं। मुरब्बी महमूद साहिब ने मुझे जमाअत के बारे में और इस के अक़ीदों के बारे में मालूमात देनी शुरू कीं। मुझे यह सब बनावटी और झूठ लगा। मैंने इन बातों को सुनते ही इनकार कर दिया लेकिन मालूम नहीं था सच की यह क़ुव्वत मुझे जल्द अपनी तरफ़ खींच लेगी। यक़ीनी तौर पर जमाअत की सच्चाई और इस के पेश की गई दलीलें बहुत दृढ़ हैं। वीडियो में देखे जाने वाले नज़्ज़ारे यहां आकर हक़ीक़त में देखने का अवसर मिला। हुज़ूर को क़रीब से देखने के लिए में जुम्अ: में पहली सफ़ में जा कर बैठा था। हुज़ूर को तशरीफ़ लाता देख कर बहुत ही आन्नद महसूस किया। यह रुहानी लज़्ज़त उस वक़्त और बढ़ गई जब हुज़ूर की मुबारक ज़बान से कुरआन करीम की तिलावत सुनी। ऐसे लगा कि यह आवाज़ और इस का रुहानी प्रभाव सिर्फ हुज़ूर से ही ख़ास है। जलसा में बहुत से लोगों से मिलने का अवसर मिला लेकिन हर एक से मिलकर एक ही जैसा ख़ुशगवार एहसास होता था जो यक़ीनी तौर पर दलील है कि यह एक सच्ची जमाअत है।

अल्लाह तआला ने मुझे हुज़ूर के हाथ पर बैअत का सौभाग्य बख़्शा। पहली बार जब मुझे यह सूचना दी गई तो मुझे यक़ीन न आया। मैंने चार पाँच बार पूछा कि क्या वास्तव में हुज़ूर के मुबारक हाथ पर हाथ रखकर बैअत करूँगा। मेरी आँखों में आँसू आ

**इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस**

**ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।**

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

**तालिबे दुआ**

**मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर( उत्तर प्रदेश)**

**हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम**

**खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।**

**तालिबे दुआ**

**Sohail Ahmad Nasir and Family**

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

गए और साथ ही परेशान हो गया कि मैं तो इस योग्य नहीं। फिर मैंने दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार का विर्द शुरू किया। बैअत का अवसर आने तक मैं न खा सका और न ही कुछ और कर सका। अल्हम्दुलिल्लाह बैअत का अवसर भी आ गया। हुज़ूर अपने नूर वाले चेहरे के साथ पधारे तो मेरी आँखें साथ नहीं दे रही थीं। अल्लाह तआला ने मुझे ऐसे क़ुव्वत बख़श रुहानी अवसर से नवाज़ा कि मैं बैअत के बाद सिज्दा में गिर गया और इस ज़ात का शुक्र अदा किया जिसने अपने इस तुच्छ गुनाहगार बंदे को अपने इतने मुक़द्दस बंदे के हाथ पर बैअत की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई। जलसा के बाद मुझे मालूम हुआ कि हुज़ूर अनवर के साथ हमें एक मुलाक़ात का अवसर मिल जाएगा। मैं सारा दिन कई सवाल सोचता रहा। ज़ेहन में यह भी आता रहा कि बैअत के वक़्त जो चेहरा देखा था इस को इतनी जल्दी दुबारा देखूँगा। जब मुलाक़ात का अवसर आया तो मैं अपने ज़हन में सोचे हुए कई सवालों को भूल गया और सिर्फ सबसे ज़्यादा फ़िक्रमंद करने वाला सवाल याद रहा कि आया जलसा के बाद अपने देश जाने के बाद क्या रूहानियत का यह स्तर क़ायम रहेगा? या उस को कैसे क़ायम रख सकते हैं। अल्हम्दुलिल्लाह हुज़ूर ने मेरी यह मुश्किल दूर फ़र्मा दी। आपके जवाब ने मुझे तसल्ली प्रदान फ़र्मा दी कि नमाज़ में सूरह फ़ातिहा اهدنا الصراط المستقيم-صراط الذين انعمت عليهم और इस्तिग़फ़ार उस का हल है। मैं यहां से अह्द कर के जा रहा हूँ कि अगले जलसा तक इस नसीहत पर अनुकरण करूंगा और अगले जलसा पर आकर हुज़ूर को बताऊँगा।

ऑस्ट्रिया से सम्बन्ध रखने वाली एक मेहमान फ़ातिमा सामर अलललबाबेदी साहिबा लिखती हैं: मैंने जलसा जर्मनी के अवसर पर दिनांक 7 जुलाई को बैअत की है। हुज़ूर अनवर से दुआ की दरख़ास्त है कि मेरी बैअत बरकत वाली हो और मेरी कोई ग़लती मेरे इस अह्द बैअत को तोड़ न दे। अल्लाह करे कि मैं अपने अंदर वह तब्दीलियां पैदा कर सकूं जिनका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी में ज़िक्र किया है। मैं अपनी फ़ैमिली के साथ 2011 ई से अहमदी हूँ। दो माह बाद मेरी उम्र 18 साल हो जाएगी। मेरी बचपन से यह इच्छा थी कि ख़ुद बैअत करूँ। मैंने 2011 ई से अपना बैअत फ़ार्म सुरक्षित किया हुआ था ताकि ख़ुद पेश करूँ और हुज़ूर अनवर के हाथ पर ख़ुद बैअत करूँ। यह तीसरा जलसा है जिसमें में शामिल हुई हूँ। मेरी अनुवाद और अरब मेहमानों को तब्लीग़ करने के सैक्शन में डयूटी थी। इस क़दर तब्लीग़ की तौफ़ीक़ मिली कि मेरी आवाज़ भी बैठ गई। मुझे महसूस हुआ कि गोया में नूरानी रास्ते पर चल रही हूँ और अल्लाह तआला की जमाअत के साथ हूँ। यह सब कुछ हुज़ूर अनवर की मुबारक ख़िलाफ़त के साय की वजह से है। अल्लाह तआला का शुक्र है जिसने आपको हमारे और अल्लाह तआला के बीच एक ख़ूबसूरत माध्यम बनाया है और आपकी और अल्लाह तआला की बख़शी।

एक कुर्द लड़की अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहती है: कुछ साल पहले मेरी माता ने अहमदियत क़बूल की थी लेकिन इस वक़्त में तैय्यार ना थी। अब पिछले कुछ माह से मुझे शरह सदर हो रही है क्योंकि मैंने अहमदियों में आपसी मुहब्बत देखी है और आज हुज़ूर को देखने और हुज़ूर की बातें सुनने से मेरे समस्त शंकाए दूर हो गई हैं। पिछले साल भी में आई थी लेकिन ये कैफ़ीयत न थी जो आज है। मुझे आपके वजूद से नूर निकलता महसूस हुआ। मेरी माता बहुत ख़ुश होगी क्योंकि अब मुझे यह एहसास बहुत शिद्दत से होने लगा है कि मुझे अहमदी होना चाहिए।

डाक्टर मुहम्मद अलहमूद साहिब अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहते हैं :जब में दो साल पहले पहली बार जलसा पर आया तो मुझे बहुत अजीब लगा और मेरे लिए बिलकुल नई बात थी कि अहमदी कहते हैं कि मह्दी और मसीह आ गया और हमें उस का बिलकुल इल्म ही नहीं , मेरे ज़ेहन में कई सवाल चक्कर लगाते कि हमने तो यही सीखा और पढ़ा है कि मह्दी अरबी होगा और इस का नाम मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा। क्या यह जमाअत धार्मिक है या स्यासी? इसी तरह के कई प्रश्नों ने मेरे ज़हन को जकड़ लिया। इन प्रश्नों के जवाब प्राप्त करने के लिए मैं अगले साल फिर जलसा पर आया और अहमदी भाइयों से विभिन्न विषयों पर बातचीत होती रही। जलसा के बाद भी मेरा अहमदियों से सम्पर्क रहा और धीरे-धीरे मेरे समस्त सवालों के जवाब मिलते रहे और मुझे यक़ीन हो गया कि अहमदी ही एक वास्तविक मुसलमान के समस्त गुण अपने अंदर रखते हैं। अत: मैंने जमाअत की मुहब्बत और उल्फ़त से प्रभावित हो कर बैअत करने का इरादा कर लिया। महोदय कहते हैं: यह मुहब्बत जो जमाअत के लोगों में पाई जाती है अगर अल्लाह तआला उस का बीज उनके दिलों में ना बोता तो कभी भी यह मुहब्बत पैदा न होती। अलहुम्दो लिल्लाह ,अल्लाह तआला ने ख़ाकसार को इस जलसा पर हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य नसीब फ़रमाया और बैअत के वक़्त हुज़ूर का चेहरा देखकर और बैअत के शब्द दोहराते हुए जो एहसास था उसको वर्णन करना बहुत मुश्किल है , मैं बहुत ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि अल्लाह तआला ने ख़लीफ़ा वक़्त के हाथ पर मुझे बैअत करने की तौफ़ीक़ दी। मैं जानता हूँ कि लाखों हाथ उस बरकतों वाले हाथ को छूने की तमन्ना करते हैं। वर्णन हैं: अगर बैअत पाँच घंटे भी जारी रहती तो मैं बोर न होता और न मुझे वक़्त के गुज़रने का एहसास होता। जलसा के समापन पर मुलाक़ात के दौरान मैं हज़रत अमीरुल मोमिनीन से बहुत कुछ कहना चाहता था लेकिन भावनाओं की शिद्दत से कुछ भी न कह पाया।

फ़वाद अनज़्ज़ाल साहिब जो एक सीरियन दोस्त हैं और जर्मनी में निवासी हैं कहते हैं:मैं जमाअत के परिचय से पहले अल्लाह तआला की महानता के बारे सोचता था और मुसलमानों की हालत पर नज़र करता था जो प्रति दिन बुरी होती चली जा रही थी और यह कि उनकी हालत कब ठीक होगी, फिर जब मैं जर्मनी आ गया मैं यूरोप के अरब दोस्तों को देखकर सोचा करता था कि क्या उन लोगों के द्वारा यूरोप में इस्लाम फैलेगा जैसा कि हदीस में आया है कि आख़िरी ज़माना में यूरोप में इस्लाम फैलेगा। इस दौरान एक अहमदी दोस्त माहिर अलमानी साहिब से मेरी मुलाक़ात हुई और उसने जमाअत के बारे में बताना शुरू किया। शुरू में तो मैंने उस का विरोध किया की लेकिन जमाअत की किताबों का अध्ययन करने के बाद मैंने जलसा पर जाने का इरादा कर लिया। मैंने जलसा देखा और सोचा कि इस क़दर लोग किस तरह एक व्यक्ति के हाथ पर इकट्ठे हो गए और आपस में मुहब्बत और प्रेम का सम्बन्ध उनमें क़ायम हो गया , मैंने तहज्जुद में बहुत दुआ की कि हे अल्लाह अगर यह जमाअत सच्ची है तो मुझे इसी जलसा में बैअत की तौफ़ीक़ प्रदान फ़र्मा दे। अत: इस जलसा पर मेरा दिल सन्तुष्ट हो गया और मैंने बैअत कर ली। लेकिन मेरी बीवी ने बैअत करने से इनकार कर दिया और मैंने उसे समझाया कि तुम यह किताबें पढ़ो और ख़ुदा से इस्तिख़ार: करो। तीन महीने बाद मेरी बीवी ने इस्तिख़ार: किया और उसने ख़्वाब में देखा कि लोग जमा हैं और एक सफ़ेद कबूतर उनके बीच मौजूद है। मेरी बीवी ने पूछा कि यह कबूतर क्या है ? तो उनमें से एक व्यक्ति ने कहा कि यह कबूतर इस्लाम फैलाने के लिए कुदसी के इलाक़ा में आया है। इस ख़्वाब ने मेरी बीवी के दिल को खोल दिया और वह इस जलसा में शामिल हुईं और बैअत कर ली।

महोदय वर्णन करते हैं: मैं इस बात पर बहुत ख़ुश हूँ कि अल्लाह तआला ने मेरी समस्त फ़ैमिली को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की बैअत करने की तौफ़ीक़ दी , मैं अपने समस्त रिश्तेदारों को जमाअत की ख़ूबसूरत शिक्षा को पहुंचाना चाहता हूँ। अल्लाह तआला मुझे उसकी तौफ़ीक़ प्रदान फरमा।

कमाल उलवान साहिब जो एक लेबनानी दोस्त हैं वह अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहते हैं मेरे पास एक रैस्टोरैंट था जिसमें एक अहमदी दोस्त मुहम्मद शहादह साहिब आया करते थे, एक दिन मुझे कहने लगे कि मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि इमाम मह्दी आ भी चुके हैं और वफ़ात भी पा चुके हैं। उनके जाने के बाद मैंने सोचा कि यह व्यक्ति कौन था? फिर कुछ समय के बाद वह अहमदी आता और कहता कि इमाम मह्दी आ चुका है और एक दिन उसने कुछ बातों की वज़ाहत की जिनमें दज्जाल और वफ़ात मसीह का ज़िक्र था, मेरे लिए यह हैरत करने वाली मालूमात थीं और मेरे दिल में घर कर गईं और मेरे दिल में तहरीक पैदा करने लगीं कि मैं जमाअत के बारे में और अधिक मालूमात प्राप्त करूँ। फिर उसने मुझे जलसा पर जाने की दावत दी जिसे मैंने ख़ुशी से स्वीकार कर लिया।

कहते हैं जलसा मैं जो सबसे पहली मेरे लिए जमाअत की सच्चाई की दलील बनी वह इतनी बड़ी संख्या और उसका उत्तम प्रबन्ध था। जलसा के दौरान एक दोस्त ने मुझे बताया कि यह ख़लीफ़ हैं। फिर मैंने अहमदियों से विभिन्न सवाल किए जिनका उन्होंने बड़े प्यार से जवाब दिया। मेरा दिल अहमदियत की सच्चाई से सन्तुष्ट होता चला गया। मैंने सोचा कि अगले साल तक ज़िन्दा रहूँगा भी या नहीं इसलिए अभी बैअत करनी चाहिए तो मैंने बैअत कर ली। इसी तरह मेरी दो ख़्वाबें भी जमाअत की सच्चाई की वजह बनीं। अल्लाह के फ़ज़ल से मेरे एक बेटे ने भी बैअत कर ली और मैं चाहता हूँ कि मेरी बाक़ी औलाद भी अहमदी हो जाए। मैं अलहवारुल मुबाशिर और ख़ुत्बे जुम्अ: ग़ौर से सुनता हूँ , मेरे निकट दस बैअत की शर्तें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की तरफ़ से सिर्फ कुछ शर्तें ही नहीं बल्कि ये ख़ुदाई लाहे अमल है , बैअत से पहले में दुआ किया करता था कि ख़ुदा तआला मुझे इमाम मह्दी को देखने की तौफ़ीक़ दे। पिछली ज़िन्दगी जो जमाअत के बिना मैंने गुज़ारी है इस पर मुझे लज्जा होती रहती है, मैं इसलिए हर अहमदी का तह दिल से सम्मान करता हूँ क्योंकि ये लोग दीन मुस्तफ़ा की ख़िदमत कर रहे हैं। मुझे अब अपने बीवी बच्चों और काम करने की इतनी फ़िक्र नहीं बल्कि मुझे यह फ़िक्र रहती है कि मेरे पास इतने पैसे हों कि मैं जमाअत की तरक़्क़ी के लिए ख़र्च कर सकूं और जमाअत की ख़िदमत कर सकूं। अल्लाह तआला मेरी इच्छा को स्वीकार फरमाए।

पेलुमबा बेजा Pellumb Beja साहिब अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं मैंने हुज़ूर के हाथ पर बैअत की और जमाअत में दाख़िल होने का सौभाग्य

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 12 March 2020 Issue No.11

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पाया और इस के लिए मैं अल्लाह तआला का बेहद शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे अहमदियत में आने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है। हुज़ूर ने मुझसे पूछा कि मैं किस वजह से अहमदी हुआ हूँ तो मैंने जवाब दिया कि शक से यक़ीन की तरफ़ और अंधेरे से नूर की तरफ़ सफ़र करने से मैं अहमदी हुआ हूँ। मैं अल्लाह तआला का बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। एक साल पहले में ईमान से ख़ाली था। इस साल अल्लाह तआला ने मुझे ईमान की दौलत नसीब फ़रमाई है। मेरी पैदाइश और परवरिश मुकम्मल मज़हब से दूर माहौल में हुई। लेकिन अल्लाह तआला ने जलसा सालाना में शामिल होने और हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के द्वारा मुझे ईमान से सुसिज्जत किया।

एक मेहमान Besim Gjozi बेसिम जोज़ी साहिब कहते हैं कि :मैं एक दिन पहले अर्थात जलसा के आख़िरी दिन ही बैअत करके जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में शामिल हुआ हूँ और इस के लिए मैं अल्लाह तआला का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।

एक जर्मन मुबाइयात औरत जिन्होंने इस साल बैअत की सौभाग्य प्राप्त की थी उन्होंने बताया: मैं पहली बार जलसा सालाना में शामिल हुई हूँ। मैं जमाअत के बारे में किसी हद तक वाक़िफ़ थी। लेकिन इसी तरह इल्म प्राप्त करने के उद्देश्य से मैं जलसा सालाना में शामिल हुआ। जलसा पर जिस तरह की मुहब्बत भरी और रुहानी फ़िज़ा थी, जिसे मानो छू कर महसूस किया जा सकता था। हर चेहरा नफ़रत से पाक और एक दूसरे के लिए मुहब्बत लिए हुए था। मैंने समस्त तक़रीरों को बहुत ग़ौर से सुना और उनसे बहुत कुछ सीखा। जलसा सालाना की कुछ चीज़ें तो मैं उम्र भर नहीं भूल सकूँगी।

उनमें सब से पहले नमाज़ बाजमाअत की अदायगी है। नमाज़ के दौरान जो रुहानी माहौल होता था, वह रूह को झिंझोड़ कर रख देता था। दूसरा वह लम्हा जब मैंने बैअत कर ली तो मैंने अपने अंदर एक ऐसा स्थायी सुकून उतरते पाया, जो वर्णन नहीं कर सकती। एक अमन तथा सुकून का दरिया था जो मेरे अंदर उतर गया।

इस के बाद जब हम नौ मुबाइयात की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात थी, जब उस के बारे में सोचती हूँ तो कैफ़ीयत वर्णन करने के लिए शब्द नहीं मिलते। इस लम्हे में जब हुज़ूर अनवर ने मीटिंग रुम में क़दम रखा, समस्त माहौल बदल गया था। दिल एक बहुत ख़ूबसूरत कैफ़ीयत से भर गया था, जैसे इस विनीता को इन बरकत वाले क़दमों की बरकत से ख़ुदा तआला का क़ुरब नसीब हो गया हो।

एक और जर्मन नौ मुबायअह जिन्होंने इस साल बैअत करने की तौफ़ीक़ पाई वह लिखती हैं: जब मैंने पहली बार हुज़ूर अनवर की आवाज़ माईक पर सुनी तो मालूम हुआ हुज़ूर मेरे बहुत बहुत क़रीब हैं। हुज़ूर की आवाज़ मेरी रूह में उतर गई। इस वक़्त मेरी जो भावनाएं और कैफ़ीयत थी, वह वर्णन करने से असमर्थ हूँ। मैंने ख़ुद को बहुत ही हल्का सा महसूस किया, एक ख़ुशी और सुकून की कैफ़ीयत थी जिस में मैं डूबी हुई थी। मैं जान गई थी कि जिस सुकून और रूहानियत की तलाश में मैं थी, वह मुझे आज अहमदियत की आग़ोश में आकर मिल गया था। मैंने बैअत करने का फ़ैसला हुज़ूर की आवाज़ सुनने के बाद कर लिया था। बैअत करने के अगले दिन हम नौ मुबाइयात को हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस मुलाक़ात के दौरान एक अविश्वसनीय घटना हुई, वह यह कि मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि हुज़ूर अनवर मुझ से सम्बोधित हुए। हुज़ूर अनवर की पर शौकत शख़्सियत से इतनी मुहब्बत, उतना सुकून और रुहानी कशिश महसूस हो रहा था, जिसे वर्णन करना इस विनीता के लिए मुम्किन नहीं। इस जलसा से बहुत रुहानी तोहफ़े लेकर मैं विदा हुई और अब बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त करने के बाद बतौर अहमदी मुसलमान औरत अपनी ज़िन्दगी का आरम्भ कर रही हूँ।

जलसा सालाना जर्मनी के अवसर पर Fyrkzada Aliyev (फ़ुर्कज़ादा एल्यू) साहिब ने भी बैअत की तौफ़ीक़ पाई। महोदय नस्ल से कुर्द हैं और उनका सम्बन्ध काज़ाकिस्तान से है। जर्मनी में पनाह ली है। चार साल पहले उनसे डाक्टर उज़ैर साहिब के द्वारा जो उनके साथ पनाह लेने वाले कैंप में थे सम्पर्क हुआ था। उन्होंने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा: दो साल पहले जब मैं पहली बार जलसा सालाना जर्मनी में शरीक हुआ तो जमाअत की किताबों का अध्ययन कर चुका था और मुबल्लिग़ से आमने सामने और फ़ोन पर भी जमाअत के अकीदों से वाक़फ़ीयत प्राप्त कर चुका था। जलसा सालाना का माहौल, हुज़ूर अनवर की मुलाक़ात और आपस के भाईचारे ने मुझे बहुत प्रभावित किया था और इसी वक़्त बैअत के लिए तय्यार था। लेकिन इस वक़्त ख़ाकसार अपनी कुछ घरेलू परेशानियों और बीमारियों से मग़लूब था इसलिए बैअत का इरादा कहीं दब कर रह गया। इन दो सालों में अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया। जमाअत के लोगों से भी समपर्क मज़बूत हुआ। और अधिक अध्ययन करने का भी अवसर मिला जिसने दो साल पहले किए गए मेरे फ़ैसले को जिसका मैंने किसी से इज़हार नहीं किया था बहुत मज़बूती दी। और अल्लाह का शुक्र है कि इस जलसा के अवसर पर ख़ाकसार ने पूरे खुले दिल के साथ बैअत का सौभाग्य पाया। अलहम्दो लिल्लाह। ख़ाकसार की पत्नी और अधिक ग़ौर फ़िक्र रही हैं। उनके लिए दुआ की दरख़ास्त है।

एक दूसरी जर्मन मुबाइयात औरत जिन्होंने पिछले साल बैअत की थी वह लिखती हैं: पिछले वर्ष बैअत करने के बाद ख़ाकसार के लिए अहमदी होने की अवस्था में यह पहला जलसा था। पता नहीं चला यह एक साल कैसे गुज़र गया। जमाअत में शामिल हो कर में ऐसे महसूस करती हूँ, जैसे में अपने घर पहुंच गई हूँ। जलसा सालाना का हर लम्हा रूहानियत से भरपूर था, सारी तक़रीरें विशेषत: हुज़ूर अनवर के ख़िताब बहुत ईमान वर्धक थे। एक-एक शब्द रूह में उतर जाने वाला था। पिछले साल मैं मेहमान थी, जबकि इस साल में बहैसीयत मेज़बान मेहमानों की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ पा रही थी। यह बात मेरे लिए इतनी ख़ूबसूरत थी कि शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं। मैंने जमाअत अहमदिया को इस वक़्त पाया जब मैं अमन, मुहब्बत और रूहानियत की तलाश में बहुत थक चुकी थी।

महोदया ने कहा: अब मैं चाहती हूँ कि ख़ुदा तआला का जिसने मुझे इस सिलसिला में शामिल होने की तौफ़ीक़ दी, हर लम्हा हक़ अदा करने की कोशिश करूँ। मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे इस टीम में शामिल किया गया और इस तरह मेहमानों की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मैं नहीं जानती मेरी किस नेकी के बदले ख़ुदा तआला ने मुझे जमाअत में शामिल होने की तौफ़ीक़ दी, लेकिन मैं सिर्फ यह जानती हूँ कि अगर मैं सारी उम्र भी सिज्दे में रहूं तो शुक्र अदा नहीं कर सकती। जलसा सालाना रूह के लिए एक तर्बीयती कैंप है। हमारी ख़ुश किस्मती है कि हुज़ूर अनवर स्वंय हम में मौजूद होते हैं। वह लम्हा जब हुज़ूर अनवर लजना जलसा गाह में ख़िताब के लिए पधारे मेरी आँखों से आँसू नहीं थम रहे थे, कि अब से मेरे भी हुज़ूर हैं, मैं भी हुज़ूर के हाथ पर बैअत करने की तौफ़ीक़ पा चुकी हूँ। हुज़ूर के हर शब्द के साथ मेरी आँख से आँसू गिरते रहे, यहां तक कि तराने भी ख़त्म हो गए और मैं रोती रही। मेरे साथ बैठी जर्मन बहन ने मुझे गले से लगा लिया और हम दोनों निरन्तर रोने लगे। यह वह बेचैनी के आँसू नहीं थे बल्कि यह वे ख़ुशी के आँसू थे जो अमन की आग़ोश में आने के बाद खुशी में बहे चले जा रहे थे। शुक्रिया प्यारे ख़ुदा कि तू ने हमें सीधा रस्ता दिया।

कुछ मेहमानों ने बैअत के आयोजन के बारे में से अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा

जॉर्जिया के वफ़द में धार्मिक बातों की छात्रा Nanuka Zumbululidze भी शामिल थीं। बैअत के आयोजन के बारे में यह अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहती हैं कि: बैअत के आयोजन भावनाओं से भरपूर थी। मुझे मज़हबी इत्तिहाद का एक नज़ारा देखने को मिला और मालूम हुआ कि किस तरह विभिन्न रंग तथा नस्ल के लोग अमन के साथ इकट्ठे रह सकते हैं। मैं देनी विद्या प्राप्त कर रही हूँ। जलसा पर पहली बार आई हूँ और मेरा यक़ीन है कि यह जलसा अमन के हुसूल का एक बेहतरीन माध्यम है

पूर्वी उलूम के छात्र Giga Gigauri भी इस वफ़द में शामिल थे। यह कहते हैं: लोग बहुत प्रशंसा कर रहे थे जिसकी वजह से मैं यहां हूँ। बैअत के आयोजन मैं एक देखने वाले के तौर पर देख रहा था। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं अपने भावनाओं का इज़हार कर सकूं। लोगों का इस रंग में इकट्ठा होना एक शानदार बात है।

जॉर्जिया से एक वकील और यूनीवर्सिटी लैक्चरार Temor Shengelaya पहली बार जलसा में शामिल हुई और बहुत प्रभावित हुए। बैअत की आयोजन के बाद बार-बार कहते रहे कि यह एक मोजिज़ा है, यह एक मोजिज़ा है। कहते हैं कि जमाअत से आपसी मुहब्बत बहुत ज़्यादा है। विशेष रूप से मैंने देखा है कि आप लोगों के चेहरों पर हमेशा मुस्कुराहट रहती है

(शेष.....)

☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad